सत्यमेव जयते

भारत सरकार

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

१४ अगस्त

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस



माननीय प्रधानमंत्री
श्री नरेंद्र मोदी

“देश के बंटवारे के दर्द को कभी भुलाया नहीं जा सकता, नफरत और हिंसा की वजह से हमारे लाखों बहनों और भाइयों को विस्थापित होना पड़ा और अपनी जान तक गंवानी पड़ी। उन लोगों के संघर्ष और बलिदान की याद में 14 अगस्त को विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस के तौर पर मनाने का निर्णय लिया गया है।”

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

पृष्ठभूमि

भारत का विभाजन सिर्फ़ नक्शे में बदलाव नहीं था, यह एक गहरी मानवीय त्रासदी थी। सन 1947 में खींची गई इस लकीर ने करोड़ों लोगों की ज़िंदगियों को पलट कर रख दिया। लोग अपने ही घरों में अजनबी हो गए, मोहल्ले वीरान हो गए, और सदियों से सह-अस्तित्व की भावना के साथ बने रिश्ते एक झटके में टूट गए। करीब 65 लाख गैर-मुस्लिम उस क्षेत्र से निकलने के लिए मजबूर हो गए, जिसे बाद में पश्चिमी पाकिस्तान कहा गया। वहीं, लगभग 65 लाख मुस्लिम पंजाब, दिल्ली और भारत के अन्य हिस्सों से पश्चिमी पाकिस्तान चले गए। भारत के पूर्वी हिस्से में भी विस्थापन का यही सिलसिला चला। अनुमान है कि करीब 20 लाख गैर-मुस्लिम, पूर्वी बंगाल (अब बांग्लादेश) से निकले, और 1950 के आसपास 20 लाख और गैर-मुस्लिम पश्चिम बंगाल में शरण लेने पहुंचे। उसी दौरान, लगभग 10 लाख मुस्लिम, पश्चिम बंगाल से पलायन कर गए। इस पूरे दौर में मारे गए लोगों की संख्या का अनुमान 5 लाख से लेकर 10 लाख या उससे अधिक तक जाता है। यहां दिखाई गई तस्वीरें, चिट्ठियाँ, नक्शे और वस्तुएँ उस जीवन की गवाही देती हैं जो कभी साथ-साथ चलता था—और फिर अचानक बिखर गया।

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

माउंटबेटन योजना- एक राष्ट्र के विभाजन की घोषणा



नई दिल्ली में हुई प्रेस कॉन्फ्रेंस जहां विभाजन की रूपरेखा प्रस्तुत की गई (बाएं से दाएं)
जवाहरलाल नेहरू, लॉर्ड इस्मे (माउंटबेटन के सलाहकार),
वायसराय लॉर्ड लुई माउंटबेटन, मोहम्मद अली जिन्ना

विभाजन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

जून, 1947 - भारत के आखिरी वायसराय लॉर्ड माउंटबेटन की प्रेस कॉन्फ्रेंस। ब्रिटिश भारत के इतिहास में दूसरी और आखिरी बार था, जब किसी वायसराय ने प्रेस कॉन्फ्रेंस की थी।

इसमें तीन सौ से अधिक पत्रकार मौजूद थे — अमेरिका, रूस, चीन, यूरोप और भारत के कोने-कोने से आए प्रतिनिधि, जो पूरी एकाग्रता से वायसराय की घोषणा सुन रहे थे। इसे 'माउंटबेटन योजना' कहा गया जो औपचारिक तौर पर भारत की आज़ादी और विभाजन दोनों के बारे में थी। सत्ता हस्तांतरण की योजना को लगभग एक साल पहले धकेलते हुए माउंटबेटन ने 15 अगस्त का दिन इस काम के लिए तय किया। उन्होंने विभाजन की रूपरेखा प्रस्तावित की, जिसमें पंजाब और बंगाल के बंटवारे पर पत्रकारों ने सवाल उठाए इसमें सबसे अहम प्रश्न विभाजन से होने वाले पलायन के बारे में था।

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

“अपना इंतज़ाम लोग खुद कर लेंगे”: एक आने वाली त्रासदी



LARGEST NET SALES of any Daily Newspaper Printed In Northern, Southern, Central or Western India.

REGD. No. B111

The Times of India

ESTABLISHED 1838

NO. 132. VOL. CIX. BOMBAY: WEDNESDAY, JUNE 4, 1947 PRICE TWO ANNAS DO NOT PAY MORE

WAY OUT OF INDIAN DEADLOCK

BRITAIN'S PLAN FOR SMOOTH TRANSFER OF POWER

Immediate Dominion Status Granted

PEOPLE ASKED TO DECIDE PARTITION QUESTION

Present Constituent Assembly Not Disturbed

MR. CHURCHILL'S SUPPORT

Speedy Legislation

Mr. Winston Churchill sprang a surprise on Tuesday when, speaking in the House of Commons after Mr. Attlee had made the statement on India, he promised support to the legislation necessary to give parts of India full Dominion Status.

"It should not be right," he declared, "that such legislation Should be deemed contentious or that any long delay should elapse after it is introduced and before it is passed into law."

(See Page 5)

THE BRITISH GOVERNMENT HAVE PROMISED IMMEDIATE DOMINION STATUS TO INDIA—THIS YEAR—, AN D THEIR PLAN BY WHICH THEY WILL END THEIR 200 YEARS OF RULE PUTS FULL RESPONSIBILITY FOR THE FUTURE OF INDEPENDENT INDIA DIRECTLY ON THE SHOULDERS OF THE INDIAN PEOPLE, LEAVING THEM THE CHOICE OF PARTITION OR OF MAKING UP THEIR DIFFERENCES FOR UNITY'S SAKE.

Two-Fold Purpose

The two-fold purpose of the plan, which was announced simultaneously to the Indian people and in both Houses of Parliament on Tuesday, is (1) to make possible the maximum degree of harmony and co-operation among the Indian

Lord Mountbatten.

"UNIFIED INDIA BEST SOLUTION"

Viceroy's Appeal

"THERE IS INDIAN CONSCIOUSNESS"

NEW DELHI, June 3.

The Viceroy, broadcasting tonight announced that His Majesty's Government had accepted his proposal that they should transfer power to one or two Governments of British India, each

Only Practical Method

PREMIER'S VIEW

Plan Commended To Commons

LONDON, June 3.

The Prime Minister, Mr. Attlee, announced in the House of Commons today that the British offer of Dominion Status to one or two successor Indian authorities had been favourably received by all the three parties represented at the conferences held by the Viceroy with the Indian leaders during the past few days.

The announcement was received with loud cheers.

Mr. Attlee who was announcing the Government's plan for transfer of power to Indians said that the British Government wished to make it clear that they have no intention of attempting to frame the ultimate constitution for India. This was a matter for Indians

MR. NEHRU COMMENDS PLAN TO NATION

Mr. Jinnah Hopeful Of League's Acceptance

SARDAR BALDEV SINGH CALLS IT "SETTLEMENT"

NEW DELHI, June 3.

BROADCASTING to the nation immediately after the announcement of the British Government's plan, Pandit Jawaharla Nehru said: "It is with no joy in my heart that I commend these proposals to you, though I have no doubt that this is the right course.

"The proposal to allow certain parts to secede, if they so will, is painful for any of us to contemplate. Nevertheless I am convinced that our present decision is the right one even from the larger viewpoint."

Mr. Jinnah, who followed Pandit Nehru, said the League's final decision could only be taken by the League Council on June 9, but so far as he could gather, "on the whole, the reaction in League circles in Delhi has been hopeful."

Sardar Baldev Singh, who also spoke, commended the plan as the best under the circumstances.

Pandit Nehru in his broadcast said: "Nearly nine months ago, soon after my assumption of office, I spoke to you from this place. I told you then that we were on the march and the goal had still to be reached. There

meet my people and to learn about their troubles at first hand.

"Today I am speaking to you on another historic occasion when a vital change affecting the future of India is proposed. You have just heard an announcement on behalf of the British Government. This announcement lays down a procedure for self-determination in certain areas of India. It envisages on the

जून 1947: अखबार में विभाजन की घोषणा

बंटवारे से होने वाले पलायन के सवाल पर माउंटबेटन ने जो जवाब दिया, उसे नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता।

जवाब था - **“व्यक्तिगत तौर पर मुझे नहीं लगता ऐसा कुछ होगा, थोड़ा बहुत स्थानांतरण जो होगा वो स्वाभाविक तौर पर होगा, जिसका इंतज़ाम लोग ख़ुद कर लेंगे।”**

सत्यमेव जयते

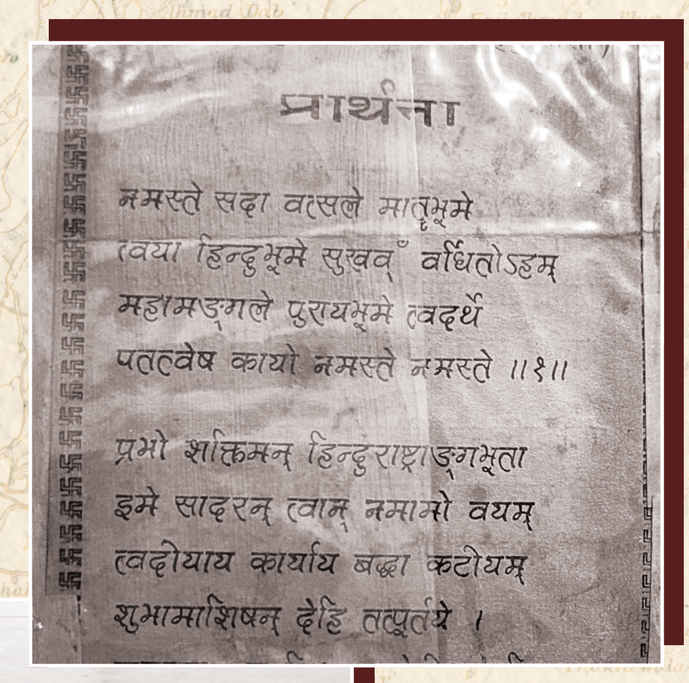
भारत सरकार

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

डेरावाल: हिंदुओं की यात्रा

प्रेस कॉन्फ्रेंस में विभाजन को कम आंकने की भूल करने वाले माउंटबेटन ही नहीं थे। किसी को भी इस बात का अंदाज़ा नहीं था कि वह मानव इतिहास के सबसे बड़े और भयावह मानव विस्थापन के गवाह बनने वाले हैं। 1.5 करोड़ से ज़्यादा लोग अपनी ज़मीन, अपने घर और अपने अतीत से उखाड़ दिए गए। ऐसा ही एक समुदाय है डेरावाल, जो 1947 में भारत के विभाजन के दौरान सिंधु घाटी के करीब बसे क्षेत्र डेरा इस्माइल ख़ान से विस्थापित हुआ। डेरावाल हिंदू समुदाय की जीवित स्मृतियाँ — यहाँ मौजूद हर तस्वीर, हर वस्तु और उनसे जुड़े हर तार इसी अनदेखी, अनसुनी कहानी का हिस्सा है।









व्यक्तिगत वस्तुओं, विरासत में मिली चीज़ों और रोज़मर्रा की सामग्री की तस्वीरों के ज़रिए यह प्रदर्शनी बताती है कि स्मृति और आस्था कैसे पीढ़ियों तक जीवित रहीं, तब भी जब वर्तमान जीवित रहने का संघर्ष था और भविष्य धुंधला पड़ा हुआ था।

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

अनिश्चित समय में शरण की तलाश









बहुत से डेरावालों के लिए विभाजन कोई तारीख भर नहीं है, बल्कि वो एक ऐसा समय है, जब उन्हें अचानक अपना सब कुछ पीछे छोड़ना पड़ा। परिवारों ने यह सोचकर घर-मोहल्ला छोड़ा कि कुछ ही महीनों में लौट आएंगे। डेरा इस्माइल ख़ान के शरणार्थियों ने या तो सिंधु नदी स्टीमर से पार की या दरिया ख़ान से ट्रेन पकड़कर लाहौर पहुँचे — और वहाँ से अमृतसर, जैसलमेर और जयपुर जैसे शहरों तक पहुँचे। आने वाले सालों में जब भारत सरकार ने ज़मीन, घर और दुकानें आवंटित करना शुरू किया, तो इन परिवारों ने धीरे-धीरे देश के अलग-अलग हिस्सों में बसना और ज़िंदगी को नए सिरे से जीना शुरू किया।

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

विभाजन और महिलाओं का मौन संघर्ष







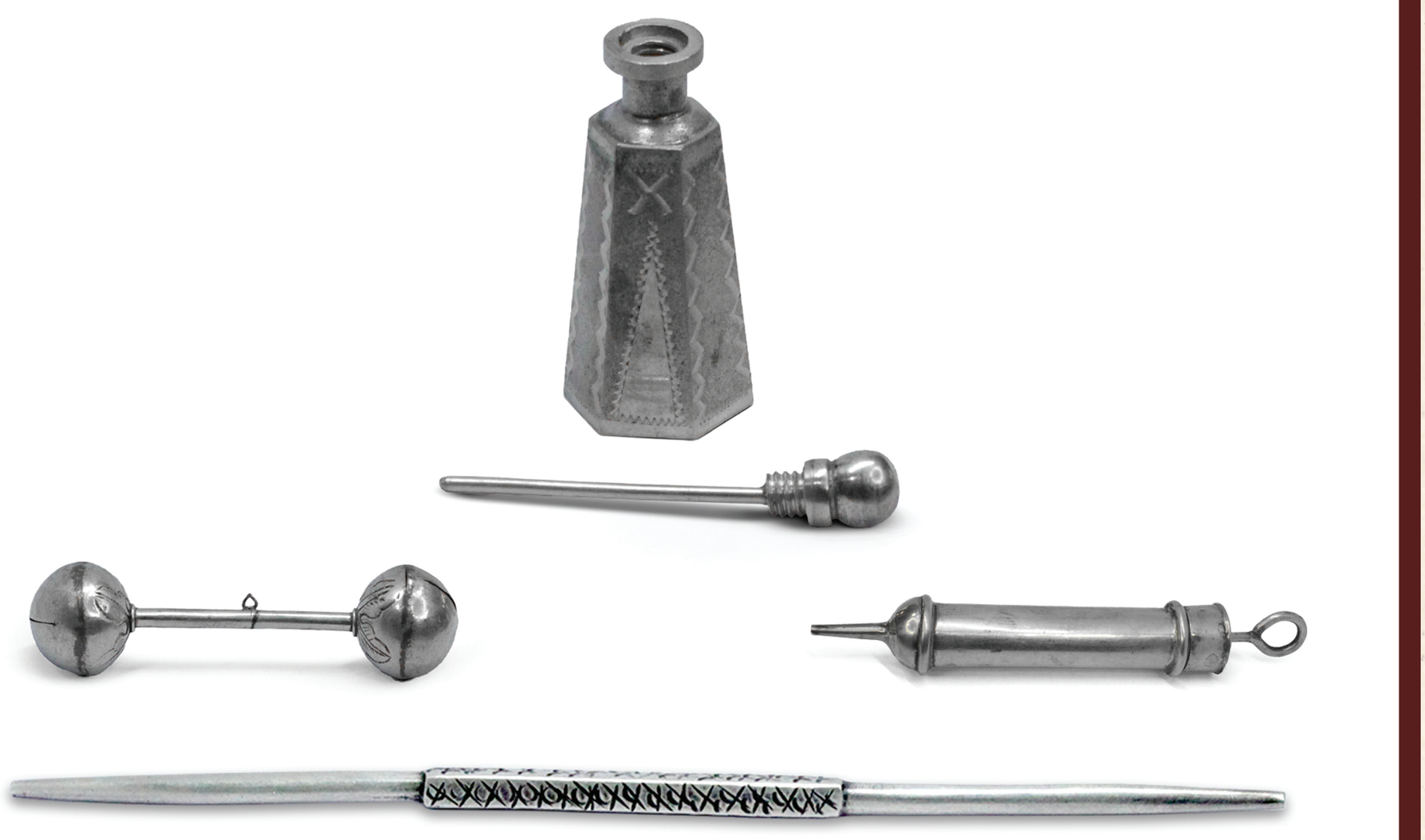
इन तस्वीरों का संबंध उस परिवार से है, जिसने 1947 में भारत के विभाजन के दौरान डेरा इस्माइल ख़ान से जयपुर आकर नया ठिकाना बनाया। इन्हीं में शामिल थीं मुन्नी देवी, स्वर्गीय श्री हीरा नंद भाटिया की बहन। मुन्नी देवी एक बाल विधवा थीं, और जब उन्होंने यह लंबी यात्रा की, तब उनकी उम्र 37 वर्ष थी। वह 1985 में अपने जीवन के अंतिम दिनों तक अपने भाई के साथ जयपुर में रहीं। विभाजन ने लाखों लोगों को बेघर किया, लेकिन महिलाओं के लिए यह त्रासदी और भयावह थी, क्योंकि उनका सामाजिक दर्जा उनके संघर्ष को और जटिल बना देता था, यही वजह है कि आज भी उनके मस्तिष्क में यह क्रूर यादें किसी गहरे ज़ख्म की तरह मौजूद हैं।

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

चांदी और सोना:
स्मृति एवं जीवनरेखा के रूप में आभूषण



विभाजन के दौरान चाँदी और सोने से बनी व्यक्तिगत वस्तुएँ — जैसे सुरमादानी, मांगटीका और अन्य आभूषण — एक तरह की चल संपत्ति के रूप में काम आईं।

इनका साथ होना, उस अस्थिरता और विस्थापन के दौर में परिवारों के लिए एक वित्तीय सहारा साबित हुआ।

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

चांदी और सोना: स्मृति एवं जीवनरेखा के रूप में आभूषण





इस तस्वीर में एक नक्काशीदार चाँदी का आईना और एक कमरबंद दिखाया गया है, जो जयपुर निवासी डेरावाल (भाटिया) परिवार को विरासत में मिली वस्तुएँ हैं।

इस कमरबंद में 19वीं शताब्दी के "एक आने" के सिक्के जड़े हुए हैं, जिन पर ब्रिटेन की रानी विक्टोरिया का नाम अंकित है।

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

चांदी और सोना:
स्मृति एवं जीवनरेखा के रूप में आभूषण





सत्यमेव जयते

भारत सरकार

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

छूटी मातृभूमि, पर साथ चली भाषा एवं विरासत









श्रीमती टुटेजा अपने हाथों में भगवद् गीता का एक प्राचीन उर्दू संस्करण थामे हुए हैं — यह उनकी पारिवारिक विरासत है, जिसे उनके पिता विभाजन के दौरान अपने साथ लेकर आए थे। डेरा इस्माइल ख़ान में श्रद्धालु समुदाय उर्दू में गीता पढ़ता था, जहाँ धार्मिक साधना, स्थानीय भाषा परंपराओं से जुड़कर एक अनूठा रूप लेती थी। ये पवित्र ग्रंथ, जो कभी ईश्वर की आराधना का ज़रिया था, आज स्मृतियों में मौजूद है।

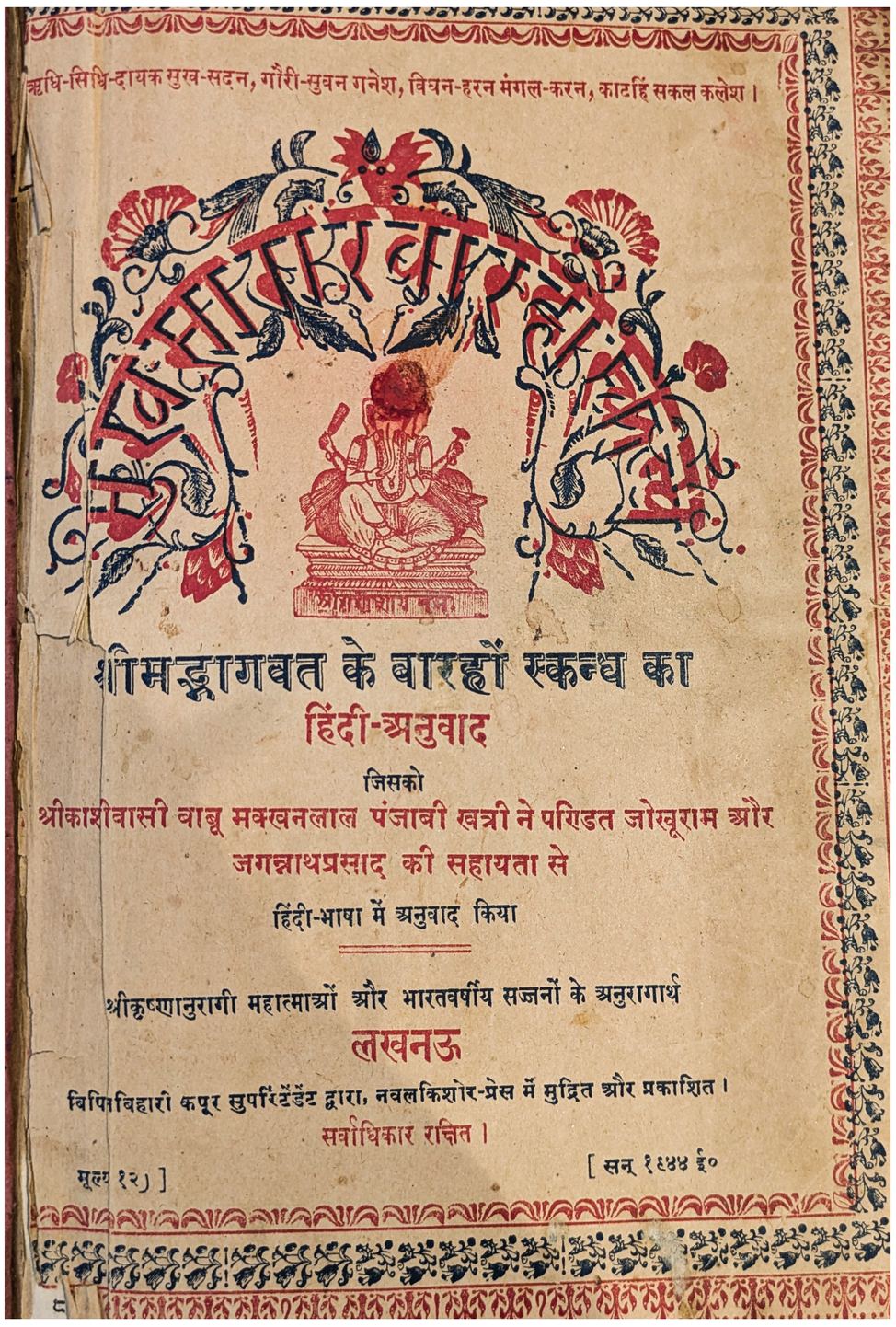
सत्यमेव जयते

भारत सरकार

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

सीमाओं के पार आस्था





1944 की हिंदी संस्करण की भागवत पुराण, लखनऊ से प्रकाशित हुई थी और डेरा इस्माइल ख़ान में एक दुल्हन को विवाह के अवसर पर दी गई थी। विभाजन के बाद, यह ग्रंथ परिवार के साथ जयपुर आ गया और वर्षों तक दैनिक पूजा-पाठ का हिस्सा बना रहा।

डेरा इस्माइल ख़ान छोड़ने के बाद धार्मिक परंपराओं को संजोए रखने के उद्देश्य से परिवार इसे साथ लाया था। परिवार की महिला प्रमुख रोज़ इसका पाठ करती थीं। उनके निधन के बाद, यह पवित्र ग्रंथ उनकी नातिन को सौंपा गया, जो आज भी पूर्वजों की धरती, श्रद्धा और पीढ़ियों की स्मृति से जोड़ने वाला एक जीवित सूत्र है।

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

सिंधु नदी के किनारे रामलीला





बाईं ओर लगी यह पुरानी तस्वीर डेरा इस्माइल ख़ान में दशहरे के अवसर पर राम और लक्ष्मण के रूप में सजे बच्चों की है। डेरावाल हिंदू समुदाय के लिए दशहरा और बैसाखी सबसे महत्वपूर्ण त्यौहारों में शामिल थे। दशहरे के दौरान नौ दिनों तक रामलीला की प्रस्तुतियाँ होती थीं, जिनका समापन सिंध नदी के किनारे होने वाले रावण-दहन के भव्य आयोजन के साथ होता था।

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

सीमाओं के ज़ख्म और रेडक्लिफ की कलम



सर सिरिल रेडक्लिफ़ (बीच में बैठे हुए), एक प्रतिष्ठित ब्रिटिश बैरिस्टर, जिनको भारत और पाकिस्तान के बीच सीमाएं तय करने का ज़िम्मा दिया गया

“अगर भारत वापस जाता तो दोनों पक्ष मुझे गोली मार देते” - ये बयान था उनका जिन्हें विभाजन को अमलीजामा पहनाने का काम सौंपा गया था। इंग्लैंड के बैरिस्टर सिरिल रेडक्लिफ़ को चालीस दिनों में भारत और पाकिस्तान की नई सीमाएँ तय करने की ज़िम्मेदारी दी गई। पहले कभी भारत न आए रेडक्लिफ ने न तो गाँवों का दौरा किया, न नदियों और जंगलों को देखा, और न ही कृषि और उद्योग के बीच संबंधों को समझा और लकीर खींच दी।

बंगाल का विभाजन उसे आर्थिक रूप से सशक्त न करके, धार्मिक आधार पर बांट रहा था, वहीं पंजाब में भी रेडक्लिफ़ की खींची हुई सीमाओं ने सबसे बड़ा हंगामा खड़ा किया। अचानक बड़ी संख्या में हिंदू, मुस्लिम और सिख अल्पसंख्यक बन गए, जिससे जबरदस्त दंगे, पलायन और हत्याएँ हुईं। सीमाएँ खींची जा रही थीं, लेकिन आबादी के पलायन की कोई योजना नहीं थी। रेडक्लिफ़ फिर कभी भारत नहीं लौटे और मरने से पहले एक पत्रकार से कहा, “मुझे दोनों पक्ष गोली मार देते।”

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

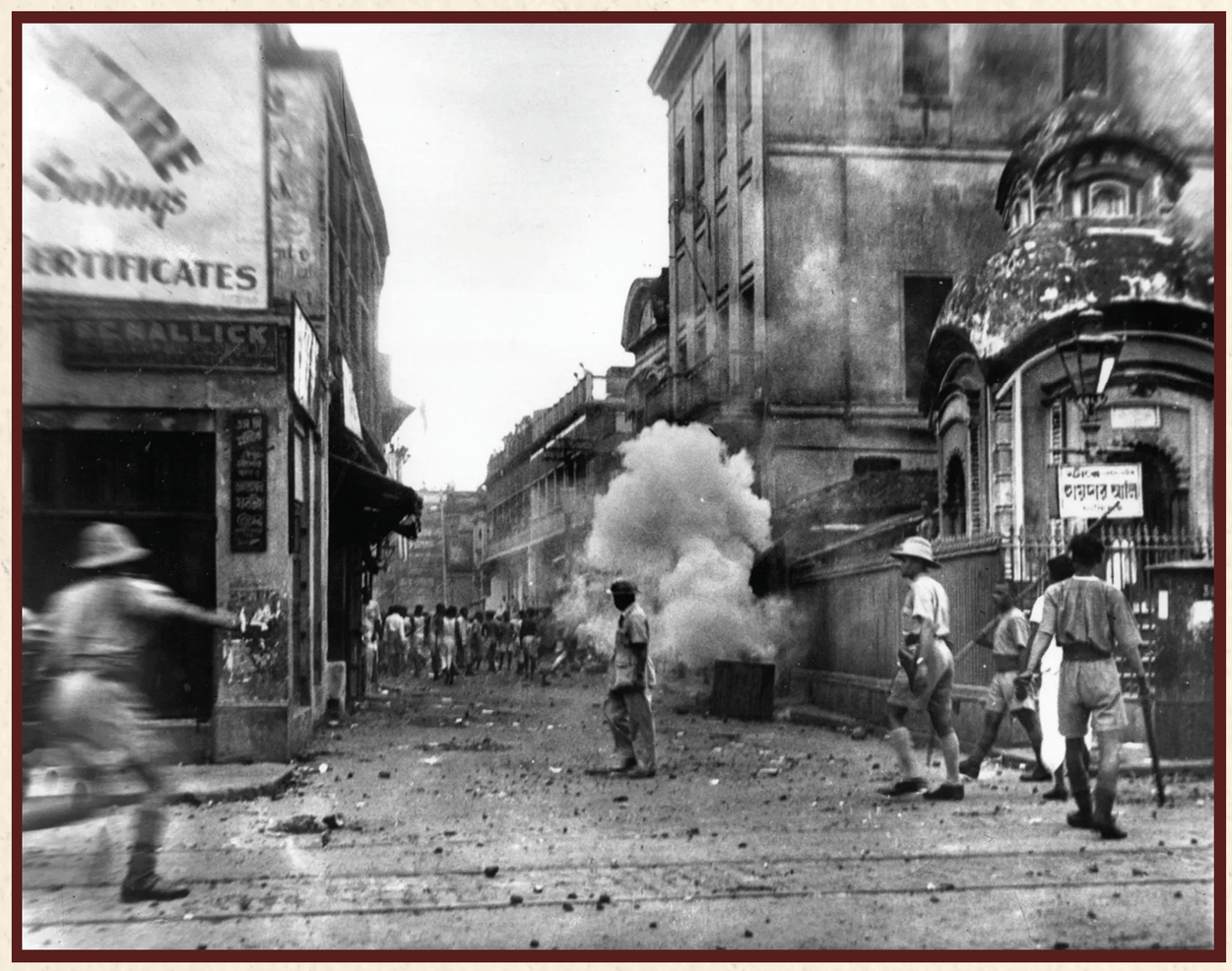
विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

टुकड़ों में बंटता देश


SUNDAY, Hindustan Standard AUGUST 25, 1946.

DEVIL'S DANCE IN CALCUTTA





रेडक्लिफ़ की खींची लकीर ने सबसे ज़्यादा असर पंजाब और बंगाल पर डाला था। बंगाल जो पहले से ही सांप्रदायिकता की आग में झुलस रहा था।

1946 में कलकत्ता दंगों ने पूरे भारत में सांप्रदायिक तनाव की ज़मीन तैयार कर दी थी। सदियों से जो समुदाय उपमहाद्वीप में सहअस्तित्व की भावना के साथ रह रहे थे, अब वो आमने-सामने थे।

ये सब ब्रिटिश हुकूमत की "फूट डालो और राज करो" वाली नीति का हिस्सा था, जिसमें वो लोगों के बीच सांस्कृतिक और धार्मिक फर्क़ को भड़का कर अपनी पकड़ मज़बूत रखते थे।

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

अकाल और आग : सुहरावर्दी का बंगाल



एच. एस. सुहरावर्दी (आगे की पंक्ति में बाएं से पहले)

1946, कलकत्ता में हुए सांप्रदायिक दंगों में स्थानीय और क्षेत्रीय राजनीतिक नेताओं ने आग में घी डालने का काम किया। जिसमें बंगाल के मुस्लिम लीग के मुख्यमंत्री एच. एस. सुहरावर्दी को सबसे ज़्यादा ज़िम्मेदार बताया जाता है। उन पर कलकत्ता में भड़काऊ भाषण देकर राज्य में दंगाइयों को हिंदू नागरिकों के खिलाफ उकसाने का आरोप था।

सुहरावर्दी की राजनीतिक सोच यह थी कि, पद पर आने के बाद उसे छोड़ा नहीं जा सकता, चाहे कुछ भी कीमत क्यों ना चुकानी पड़े । सत्ता में अपनी उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए सुहरावर्दी ने सार्वजनिक धन का इस्तेमाल करके अपने गुंडों की एक सेना तक बनाई थी, जो उनके विरोधियों को मार-पीटकर चुप करा देती थी।

1942 का अकाल जिसने बंगाल को तबाह कर दिया था, उस दौरान भी सुहरावर्दी ने भूख से बिलखते लोगों के अनाज को ज़ब्त कर उसकी कालाबाज़ारी की और इससे करोड़ों रूपये कमाए।

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

विभाजन से पहले कोलकाता का सबसे काला दौर



मुस्लिम लीग ने 16 अगस्त 1946 को "डायरेक्ट एक्शन डे " घोषित किया था। इसका उद्देश्य ब्रिटेन और कांग्रेस पार्टी को यह संदेश देना था कि भारत के मुसलमान को अगर ज़रूरत पड़ी तो वह "डायरेक्ट एक्शन" के ज़रिये पाकिस्तान हासिल करने को तैयार हैं। कोलकाता में इसें अंजाम देने के सूत्र संचालक थे, “एच. एस. सुहरावर्दी”।

उनके उकसाने पर, कोलकाता में 16 अगस्त की सुबह धार्मिक उन्माद में चिल्लाते हुए मुस्लिम भीड़ अपने घरों से हाथों में डंडे, लोहे की छड़ें, फावड़े और हर तरह के औज़ारों को हथियार बनाकर निकल पड़े, जिससे हिंदुओं को बेरहमी से मारा गया और उनके शवों को कोलकाता की खुली नालियों में फेंक दिया गया। माहौल में इस कदर डर व्याप्त था कि भयभीत पुलिस बल इस दौरान पूरी तरह नदारद रहा।

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

जिस दिन एक राज्य बिखर गया

MONDAY STATESMAN, AUGUST 19, 1946.

The Statesman.

(With which the FRIEND OF INDIA is Incorporated.)

PUBLISHED SIMULTANEOUSLY FROM CALCUTTA AND DELHI.

VOL. II. No. 22806 REG. No. C193 CALCUTTA, MONDAY, AUGUST 19, 1946. TWO ANNAS.

OVER 270 KILLED, 1,600 INJURED IN TWO DAYS

"GILDA" with GLENN FORD George MACREADY ... Joseph CALLEIA

Air-Conditioned Th...

CABLES: GREASTERN PHONE: CALCUTTA 242, ETC.

EKCO —The Flawless RADIO— A.C./D.C.—5-valve—All-wave

POWER PLANT VB RT BROTHERS

QUALITY There is TRUTH in our Quality MEANING THAT THE FURNITURE IS EXACTLY AS IT SHOULD BE MODERN FURNISHERS 38, PARK MANSIONS - PARK ST., CALCUTTA.

LIGHT with Richard CRANE—Mary Roy ROBERT & John

PURNA THE HOUSE TH... DAILY AT 3.

OUR OWN ASSETS & SE...

NATUN BA...

SUNDAY & MONDA... LAUREL & HARDY

BIG NO...

DINE at PRINC...

For taste and disc... PETER SART... Presents

A CHANGE OF PR... with

THE COWBOY AND ... A HUMOROUS E... (NIGHT LIFE IN A... with

Lalo & Musette, T... Lilian & Peter Sa... Bingel, Tan Moe... Tan Moe & Hi...

Admission Rs... From 8 P.M. to...

Riots

t

ROCKET BURSTS OVER SWEDISH TOWN

STOCKHOLM, Aug 16.—Window panes were broken in Malmo when a rocket projectile exploded over that town today. The authorities are searching for fragments of the projectile which was reported to have been seen falling to the ground.—Reuter.

SOEKARNO TO GIVE UP "DICTATORSHIP"

REQUEST TO SHARIAR TO FORM CABINET

BATAVIA, Aug 16.—The Indonesian President, Dr Soekarno, is expected in Indonesian Republican circles to give up his "dictatorial" powers to a new Cabinet which he has asked Dr Shariar, former Premier, to form, the Netherlands News Agency said today. Dr Soekarno assumed full powers fully after Dr Shariar and other Ministers had been kidnapped M.A. in ... Ministers had been kidnapped

GREEK PEL... MONARCHY

...AND U.S.A. NOT ...ND OBSERVERS

It was learned ... was informing the Turkish ... The U.S. Note is understood to contain four principal points:— ... tain four principal points:— agree to ... the USA ... for joint Soviet-

from America ... all within his power ... still further grain shipments ... tween now and the end of September. SIR G. S. Bajpai told Reuter after- ... The Secretary was ... promised to ... more

... conditions, the extent of ... ter appreciated, but even ... of the menacing



The yacht Grille, presented to Hitler by the German nation and now in British possession, is to be sold by the Admiralty. It was from the yacht, now lying at West Hartlepool, that Adm Doenitz announced Hitler's death.

Latest Treaty Proposals

CALCUTTA DEATH ROLL 200, WITH 1,500 INJURED

Crowds Fired on Today: Planes over Riot City

ARSON and death have swept Calcutta and today, second in the Moslem campaign of 'direct action,' the jittery city heard New Delhi Radio report that so far at least 200 persons have been killed and 1,500 injured. The city fire brigades have had more than 40 calls to outbreaks.

In the city's hospitals, choked with victims, surgeons and nurses worked all night at the task of catching up with the arrears of injured, some of them desperately hurt, who were brought in cars or on the shoulders of their friends.

Today the bodies of people killed with knives, sticks and other weapons were still being collected from some streets.

Normal city life was practical at a standstill, and there were no milk or newspaper deliveries today

A strong force of police, who yesterday used tear gas on the crowds, opened fire on several occasions again today to disperse crowds. R...

ing lathis — bamboo staves. The city was without public transport, both tram and bus services having stopped.

The British independence plan for India does not concede the Moslem League demand for Pakistan—a separate Moslem state.

Pandit Nehru, Congress Party president, met the Viceroy, Lord Wavell, today.

Jinnah Condemns

Pandit Nehru said today, "Our programme for forming



"Hello twins!" two young holidaymakers enjoying yesterday's fine weather.

Britain to End Leopard Men Killings

Lagos, Nigeria, Saturday.—Britain is making a big drive to stamp out the "leopard men", an African secret society that specialises in killing in the manner of leopards.

The "leopard men" generally will kill anybody for 100 manillas (8s 4d and a goat for sacrifice before the deed is committed.

Part of the equipment of the "leopard man" is a carved wooden snake which is placed in the victim's path in the lonely bush to bring him to a halt.

The victim is then skewered through the neck and scratched with a pronged instrument used to imitate the claws of a leopard.—Reuter.

Food Minister Says—

Bread Saving Came at Right Time

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

ख़ून से सना एक शहर

Riot Ultimatum: "Join Islam Or Burn"

CALCUTTA, Oct. 20. A.A.P.— Principal motives behind the lawlessness in the Noakhali district of eastern Bengal were mass conversions to the Islamic faith and the abduction of women, according to a staff correspondent of the conservative newspaper "The Statesman."

"All villages in this area have accepted Islam," said a Hindu correspondent in Noakhali, in a letter released by the Bengal Press Advisory Committee. "A huge mob gave us the ultimatum to join Islam or be burnt."

Villages had been attacked, houses burned, and some women carried off, according to evacuees who have arrived in Calcutta from the Noakhali area. About 1000 more evacuees have arrived.

"The Statesman" says about 150,000 persons and 400 villages are affected by the mob violence. It quotes a staff correspondent as saying that 10,000 persons had left the interior and were sheltering at Chandpur.

A correspondent of the Moslem "Morning News" reports that stories of mass conversion and the abduction of women were entirely untrue and were only intended to excite communal passions and oust Bengal's Moslem League Ministry.

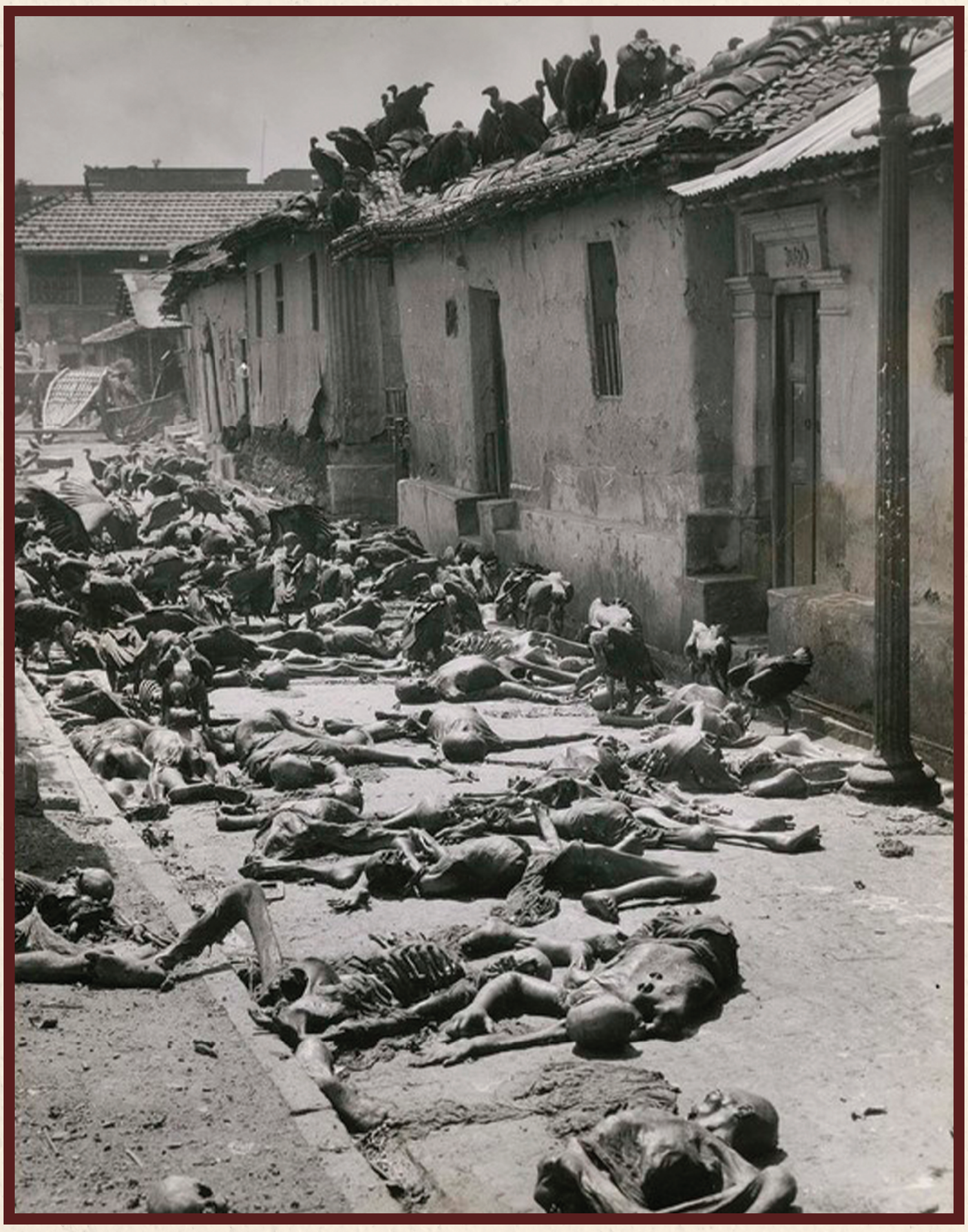
IN BRIEF

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

दो मानवीय त्रासदियों का गवाह



कोलकाता में 1946 में बड़े पैमाने पर धार्मिक जनसंहार की पहली श्रृंखला देखने को मिली, इस हिंसा में लगभग पाँच हज़ार लोग मारे गए। अमेरिकी फोटो जर्नलिस्ट मार्गरिट बॉर्क-व्हाइट, जिन्होंने एक साल पहले नाज़ी कॉन्सन्ट्रेशन कैंप के गेट खुलते देखे थे, उन्होंने कोलकाता की सड़कों को देखकर लिखा — **"ये जगह बुकनवाल्ड जैसी लग रही थी।"** बुकनवाल्ड - जर्मनी के सबसे बड़े नाज़ी कॉन्सन्ट्रेशन कैंपों में से एक बताया जाता है।

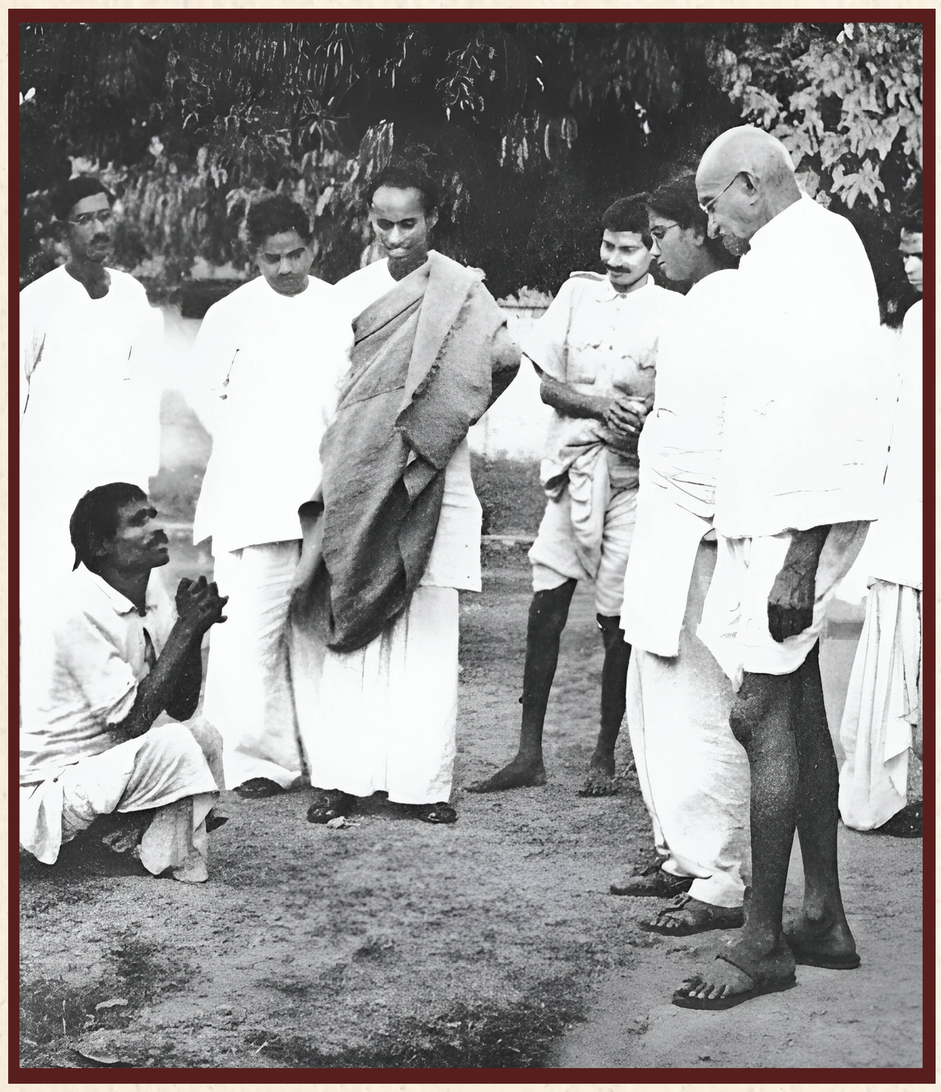
सत्यमेव जयते

भारत सरकार

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

नोआखली नरसंहार और महात्मा गांधी का मार्च





कोलकाता में हिंदुओं के खिलाफ लगाई गई सांप्रदायिक आग की चपेट में बंगाल के दूसरे इलाके भी आ रहे थे। ‘द ग्रेट कलकत्ता किलिंग्स' के कुछ महीनों बाद, नोआखाली में भी हिंसा भड़क उठी।

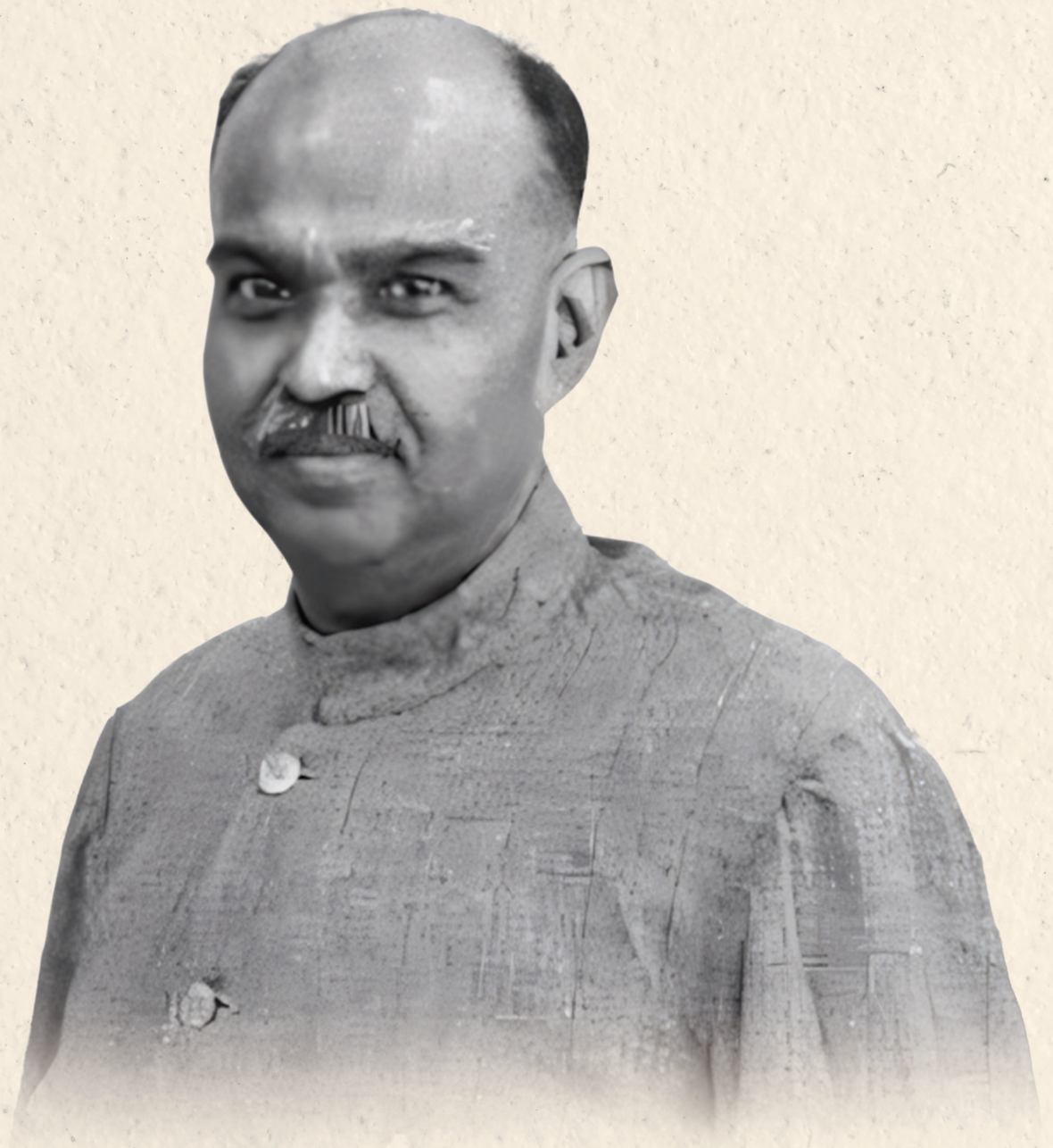
इस क्रूरता ने महात्मा गांधी को हिला दिया। वे तुरंत पूर्वी बंगाल पहुंचे और करीब चार महीने तक नंगे पांव गांव-गांव घूमकर अहिंसा और सांप्रदायिक सोहार्द का संदेश देते रहे।

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी : दंगे, अकाल और राजनैतिक संकठ के बीच एक दृढ़ नेतृत्व



सांप्रदायिक दंगों की आग को बुझाने के योगदान की जब बात होती है तो नोआखली का ज़िक्र इतिहास में सर्वाधिक होता है, और उस दौरान महात्मा गांधी की भूमिका पर भी खूब बात हुई है। लेकिन जब बंगाल जल रहा था, तब कुछ नायक ऐसे भी थे, जो बस चुपचाप इस आग को बुझाने का काम कर रह थे ।

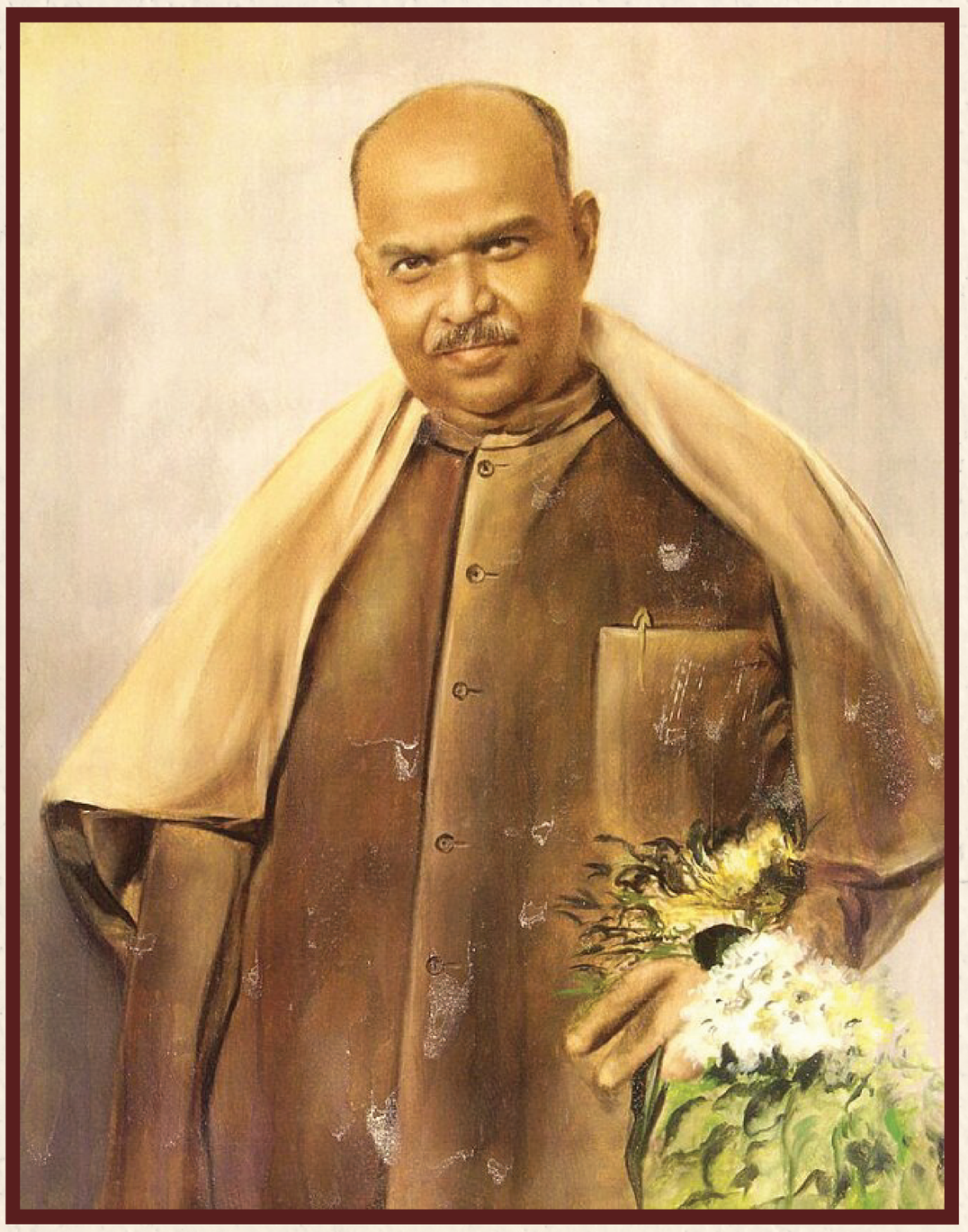
डॉ॰ श्यामा प्रसाद मुखर्जी एक ऐसा ही नाम था, इन्होंनें बंगाल के इतिहास को और बदतर होने से बचाया, लेकिन हम उनके योगदान को बहुत कम जानते हैं ।

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

भारत की राजनैतिक चेतना के शिल्पकार



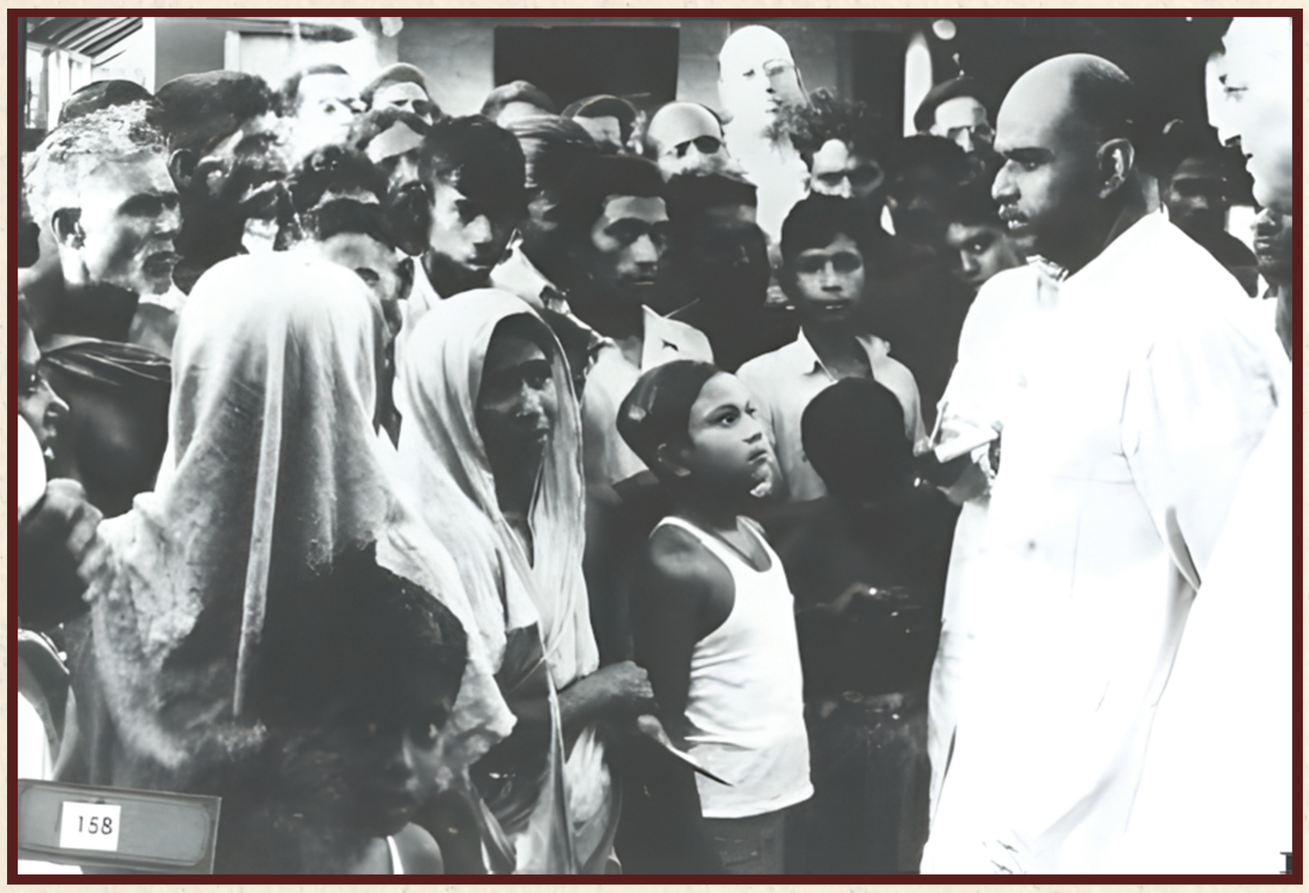
- श्यामा प्रसाद मुखर्जी वकील, शिक्षाविद् और नेता थे। वे स्वतंत्र भारत की पहली सरकार में कैबिनेट मंत्री रहे।
- कलकत्ता में साल 1901 में जन्मे मुखर्जी सबसे कम उम्र में कुलपति बने थे।
- जब उन्हें कलकत्ता यूनिवर्सिटी का वाइस चांसलर बनाया गया तो उनकी उम्र केवल 33 साल थी, वे चार साल तक इस पद पर रहे।
- 1939 में वे बंगाल में हिंदू महासभा में शामिल हुए।
- 1940 में उन्हें हिंदू महासभा का अध्यक्ष बनाया गया।
- 1951 में उन्होंने भारतीय जनसंघ का गठन किया। ये वही भारतीय जनसंघ है, जिसने आगे चलकर मौजूदा भारतीय जनता पार्टी का रूप लिया।

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

बंगाल का विभाजन और डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की भूमिका



डॉ मुखर्जी के प्रयासों से यह सुनिश्चित हुआ कि बंगाल का एक हिस्सा भारत के साथ बना रहे

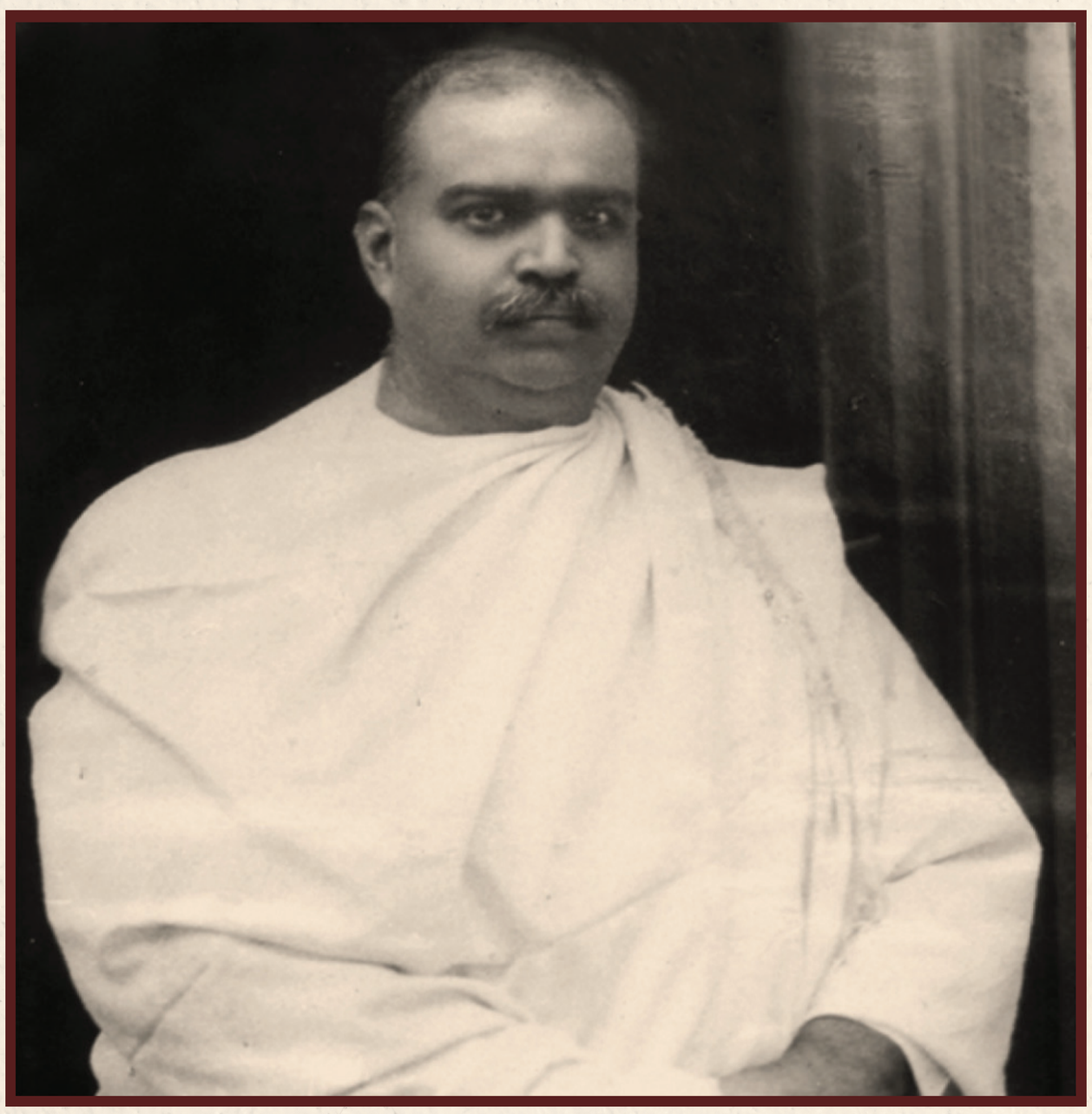
- उनके प्रयासों की बदौलत पश्चिम बंगाल का निर्माण हुआ और कोलकाता इसकी राजधानी के रूप में भारतीय संघ का अभिन्न अंग बना रहा।
- डॉ मुखर्जी ने पूरे बंगाल को पाकिस्तान में शामिल करने का विरोध किया और बंगाली हिंदुओ के लिए मातृभूमि के रूप में एक प्रांत के निर्माण की वकालत की।
- बंगाल के विभाजन की योजना के लिए उनकी सशक्त, ठोस और समय पर वकालत ने बड़ी संख्या में लोगों को उनके पक्ष में खड़ा किया।

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

पश्चिम बंगाल के निर्माता



जनमत जुटाया और बुद्धिजीवियों का समर्थन किया

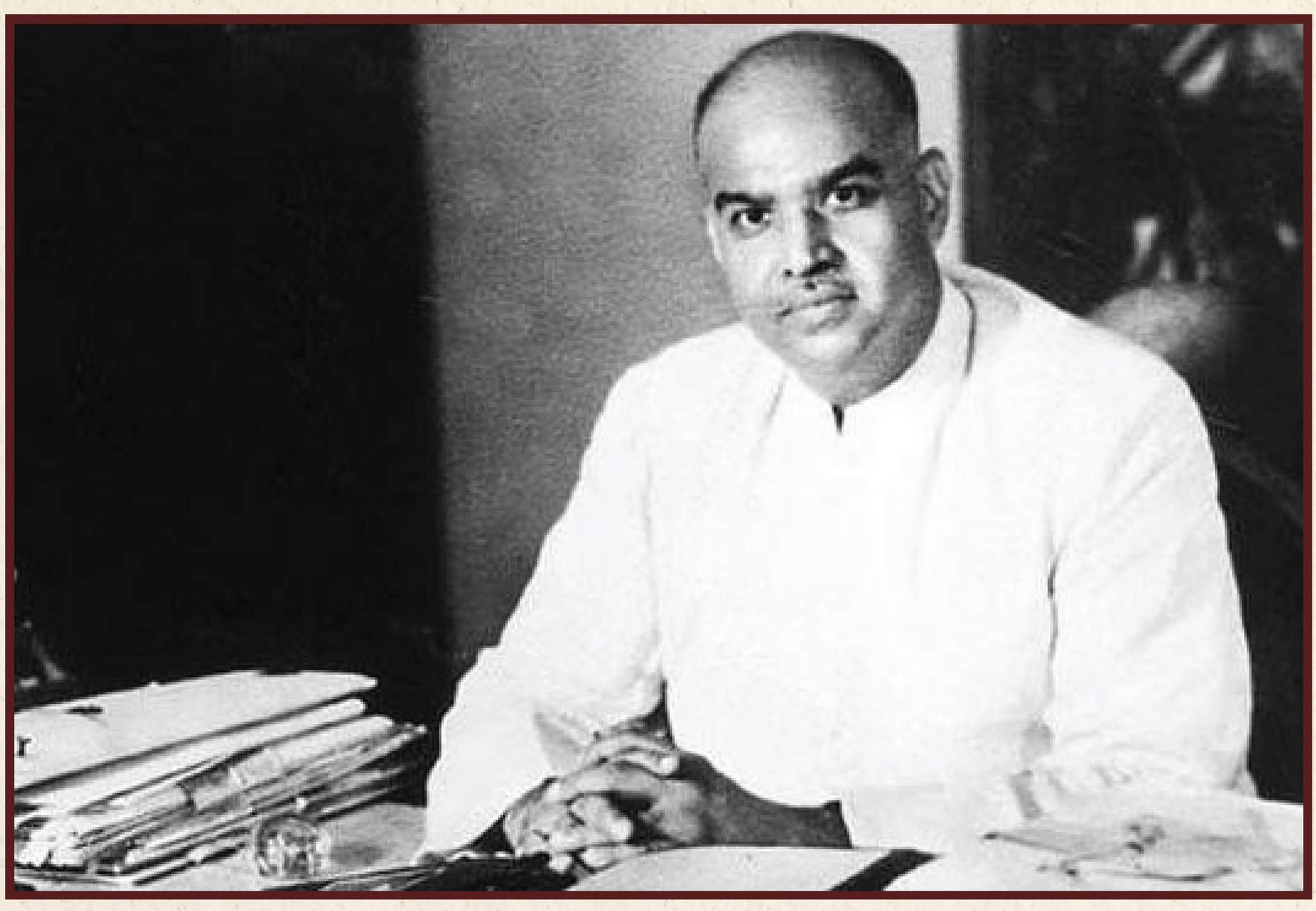
- डॉ. मुखर्जी ने वायसराय माउंटबेटन से मुलाकात की और आर.सी.मजूमदार, जदुनाथ सरकार, राधाकुमद मुखर्जी, मेघनाद साहा, पी.आर.ठाकुर और जी.डी बिड़ला जैसे प्रमुख बुद्धिजीवियों सहित बंगाली समाज के विभिन्न वर्गों से मिलकर पश्चिम बंगाल के निर्माण के पक्ष में जनमत जुटाया।
- पश्चिम बंगाल का निर्माण निस्संदेह श्यामा प्रसाद मुखर्जी की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक था।

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

मुखर्जी का ऐतिहासिक पत्र: पश्चिम बंगाल की नींव



23 अप्रैल, 1947 को लार्ड माउंटबेटन के साथ बैठक में श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने विस्तार से बंगाल पर चर्चा की। उसी साल दो मई को मुखर्जी ने माउंटबेटन को एक लंबा पत्र भी भेजा। 20 जून 1947 को पश्चिम बंगाल के निर्माण का फ़ैसला किया गया।

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

डायरेक्ट एक्शन डे पर बंगाल में हो रही घटनाओं के दौरान राहत कार्यों में डॉ श्यामा प्रसाद का नेतृत्व



Amrita Bazar Patrika

78th YEAR OF PUBLICATION

CALCUTTA UNDER MOB RULE

JINNAH DECLINES NEHRU'S OFFER

Congress To Go Ahead With Formation Of Interim Govt.

India's Freedom In No Time

161 Persons Killed And Over 800 Injured

CURFEW PROCLAIMED

Orgy Of Looting, Rioting, Stabbing & Incendiarism

LEAGUE'S 'DIRECT ACTION' DAY SEQUEL

Calcutta was handed over to unchecked mob rule yesterday — 16th of August, the direct action day as announced by the Muslim League.

There was widespread looting, rioting, stabbing and incendiarism all over the city. The police were conspicuous by their absence from most of the places. Wherever they appeared after frantic calls for protection they hardly interfered with rioters.

Over 800 persons were removed to different hospitals of the city with injuries. The number of death upto 1-30 a.m. was given as 161. This does not give the correct figures of dead and injured for many persons dead or dying were found lying in the street unattended towards the nightfall.

Troops have been moved into the city and stationed in police headquarters. Curfew has been ordered in the city from 9 p.m. to 4 a.m. [Bengal Time]

Mr. H. S. Suhrawardy, Chief Minister of Bengal, interviewed by A. P. I. late last night said that the situation was improving.

No incidents were reported from anywhere else in India.

ALLIED DESIGN IN ITALY AND GREECE

Molotov's Charges Denied By Mr. Alexander

Vision Of Ideal State

Gandhiji's Reply To Questions

BANK STRIKE TODAY

Mass Meeting Postponed

BRITISH DESIGN IN INDIA

Denial By Foreign Office

CABINET MISSION IN INDIA.

हिंसा और फैलती हुई अशांति

- 16 अगस्त 1946 को मुस्लिम लीग के डायरेक्ट एक्शन डे ने चार दिनों तक सुनियोजित सांप्रदायिक हिंसा को जन्म दिया।
- एच.एस. सुहरावर्दी के नेतृत्व वाली मुस्लिम लीग सरकार ने इस दौरान अवकाश घोषित कर दिया, जिसकी वजह से भीड़ लूटपाट, आगजनी और हत्या कर पाई, जबकि स्टेट मौन रहा। ब्रिटिश अधिकारियों ने इसे 'अनियंत्रित बर्बरता' बताया।
- यह आतंक जल्द ही नोआखली में भी फैल गया, जहां नरसंहार, बलात्कार और जबरन धर्मांतरण होने लगे।

डॉ. श्यामा प्रसाद ने राहत प्रयासों का नेतृत्व किया

- सरकार की मिलीभगत और पतन के बावजूद डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने कदम पीछे नहीं खींचे।
- डॉ मुखर्जी के सार्थक प्रयास –
  - हिंदुस्तान नेशनल गार्ड का गठन किया।
  - बचाव, राहत और सुरक्षा प्रयासों का नेतृत्व किया।
  - दंगा प्रभावित क्षेत्रों का व्यक्तिगत रूप से दौरा किया।
  - नागरिक सुरक्षा को संगठित किया।

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

“डायरेक्ट एक्शन डे” के विरोध में डॉ मुखर्जी का ऐतिहासिक भाषण

बंगाल विधान सभा में 20 सितंबर 1946 को डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने मुस्लिम लीग के मंत्री एच. एस. सुहरावर्दी के नेतृत्व वाली सरकार के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव के समर्थन में भाषण दिया था। उन्होंनें अपने भाषण में सुहरावर्दी को 16 अगस्त 1946 को हुए 'ग्रेट कलकत्ता किलिंग' के लिए जिम्मेदार ठहराया था । उन्होंनें अपने भाषण में कहा था कि -

“जो कुछ हुआ है वह अचानक हुए विस्फोट का परिणाम नहीं है, बल्कि यह एक अकुशल, भ्रष्ट और सांप्रदायिक प्रशासन की पराकाष्ठा है, जिसने इस महान प्रांत के जीवन को विकृत कर दिया है। लेकिन जहां तक तात्कालिक कारण का सवाल है, मुस्लिम लीग के सदस्यों और विपक्ष द्वारा सही संदर्भ दिया गया है कि हमें उस प्रस्ताव पर ध्यान देना होगा जो मुस्लिम लीग की परिषद के अखिल भारतीय सत्र में बॉम्बे में पारित किया गया था। अब वहां क्या हुआ था? मुस्लिम लीग की ओर से कहा गया है कि कैबिनेट मिशन मुस्लिम हितों के प्रति अविश्वासपूर्ण साबित हुआ और इस तरह ऐसी स्थिति पैदा हुई जिसका इस देश में एंग्लो-मुस्लिम संबंधों के इतिहास में कोई उदाहरण नहीं है। कैबिनेट मिशन ने वास्तव में क्या किया? मुस्लिम लीग, जो पिछले तीस वर्षों से ब्रिटिश साम्राज्यवादियों की बिगड़ैल और लाड़ली संतान थी, को ब्रिटिश लेबर सरकार ने पहली बार अस्वीकार कर दिया था... (सरकारी बेंचों से जोरदार शोर)... मैं यह जानता हूं कि सदस्य, जब कड़वी सच्चाई सुनते हैं, तो शायद ही अपनी भावनाओं को दबा पाते हैं“

- (बंगाल विधान सभा, 20 सितंबर 1946)

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

१९४६

संविधान सभा में एक देशभक्त आवाज़



बंगाल से संविधान सभा के लिए चुने गए

- बंगाल में हुए विनाश और कलकत्ता हत्याकांड के बाद डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी दिल्ली आए, जहां वे एक राष्ट्रीय नेता बनने की ओर अग्रसर हुए।
- बंगाल से संविधान सभा के लिए चुने जाने के बाद वे पूर्वी बंगाल के हिंदुओं की एक प्रमुख आवाज़ और संवैधानिक राष्ट्रवाद के रक्षक बन गए।
- उन्होंनें शुरु में विभाजन का विरोध किया, एक मजबूत और संप्रभु केंद्र के लिए तर्क दिया और संघीय कमज़ोरियों के खिलाफ चेतावनी दी।
- उन्होंने धर्म के आधार पर विशेष अधिकारों को अस्वीकार कर दिया, समान नागरिकता का समर्थन किया और अलग-अलग निर्वाचन क्षेत्रों के होने का विरोध किया।
- नागरिक स्वतंत्रता, शिक्षा सुधार और समान नागरिक संहिता के एक दृढ़ समर्थक थे, न्याय, समानता और सांस्कृतिक अखंडता में निहित एक अखंड भारत के लिए हमेशा खड़े रहे।

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

इतिहास का वीभत्स पलायन- जब साथ में बस परछाई रही

महात्मा गांधी से लेकर श्यामा प्रसाद मुखर्जी तक तमाम नेताओं के अथक प्रयासों के बावजूद वह नहीं रुक सका जिसे इतिहास का सबसे बड़ा मानवजनित पलायन कहा जाता है। जिसमें एक वर्ष की अवधि में, लगभग 1.5 करोड़ लोगों ने उन सीमाओं को पार किया जिन्हें ब्रिटिश साम्राज्य ने जल्दबाज़ी में खींचा था। लाखों लोग अपने पूर्वजों की धरती, अपने घर, खेत, अपनी जड़ों को छोड़कर अनजाने भविष्य की ओर निकलने को मजबूर हुए। पीढ़ियों ने जो गृहस्थी बसाई थी, उसे लोगों को एक रात में एक पोटली में समेटना था। सबके सामने बस एक ही सवाल था, क्या लें, क्या छोड़ें?

बैलगाड़ियों पर लदी जिंदगियां, गठरियों में बंधे सपने और किसी खुली हुई गठरी से झांकती शादी की साड़ियां और अच्छे समय की यादों के तौर पर लाया गया हुक्का या कोई तस्वीर, उपहार में मिले बर्तन उस दर्द को बयान कर रहा था, जिसे राजनीति ने तय किया था और इंसान ने भुगता था।

सत्यमेव जयते

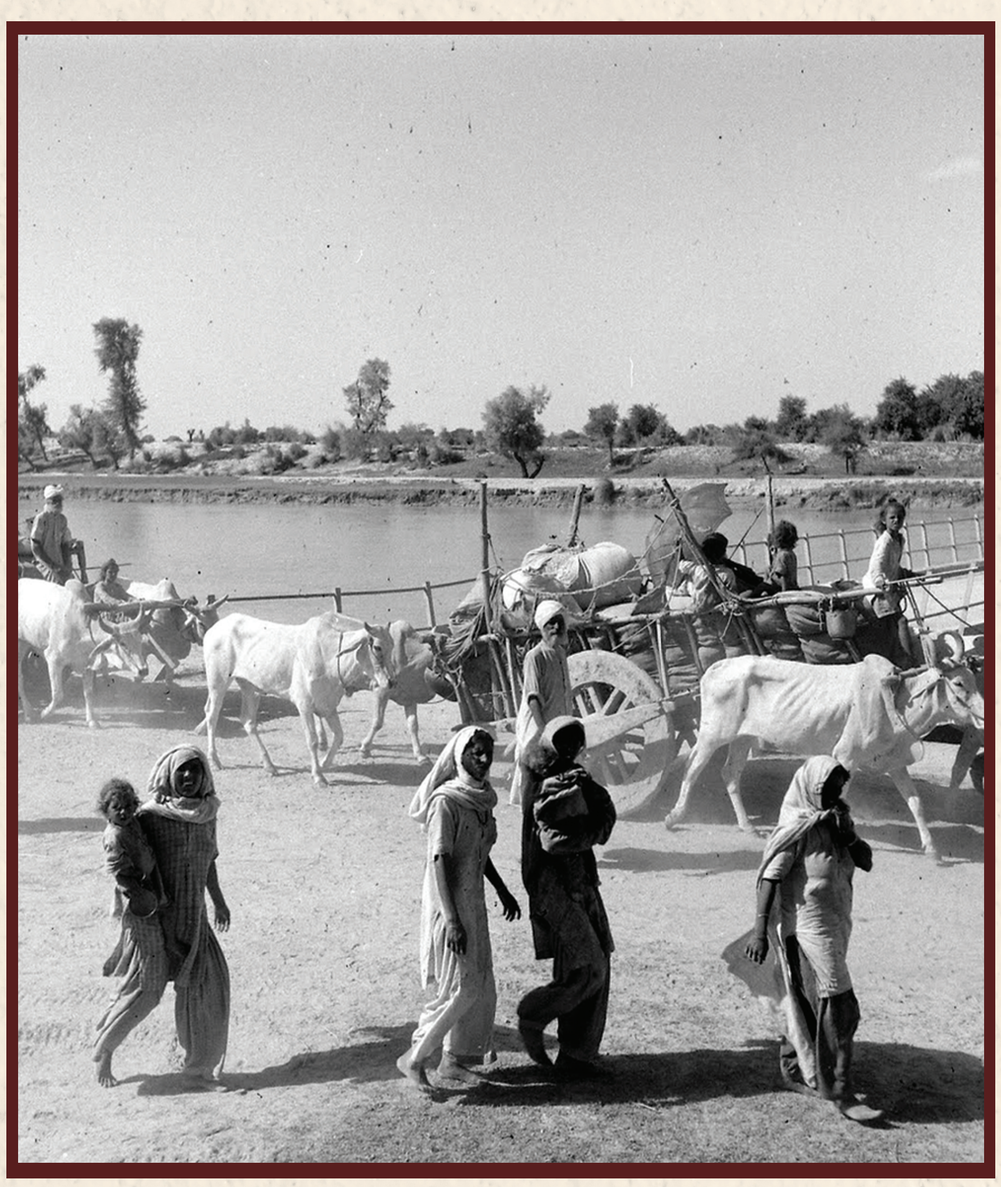
भारत सरकार

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

कंधो पर पलायन के लिए मजबूर पीढ़ियां









सत्यमेव जयते

भारत सरकार

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

यादों का बोझा और उम्मीदों की पोटली

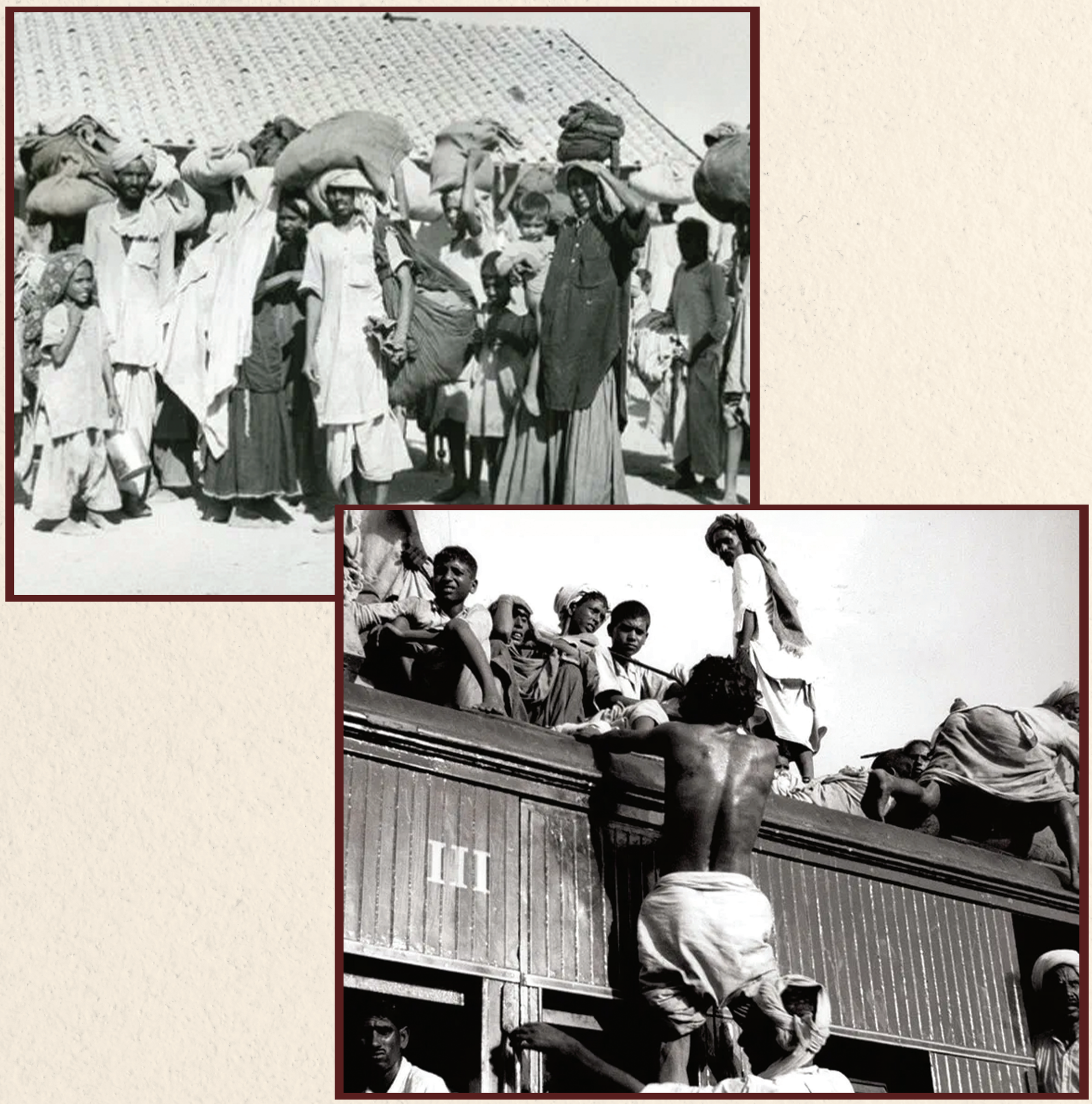




सत्यमेव जयते

भारत सरकार

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

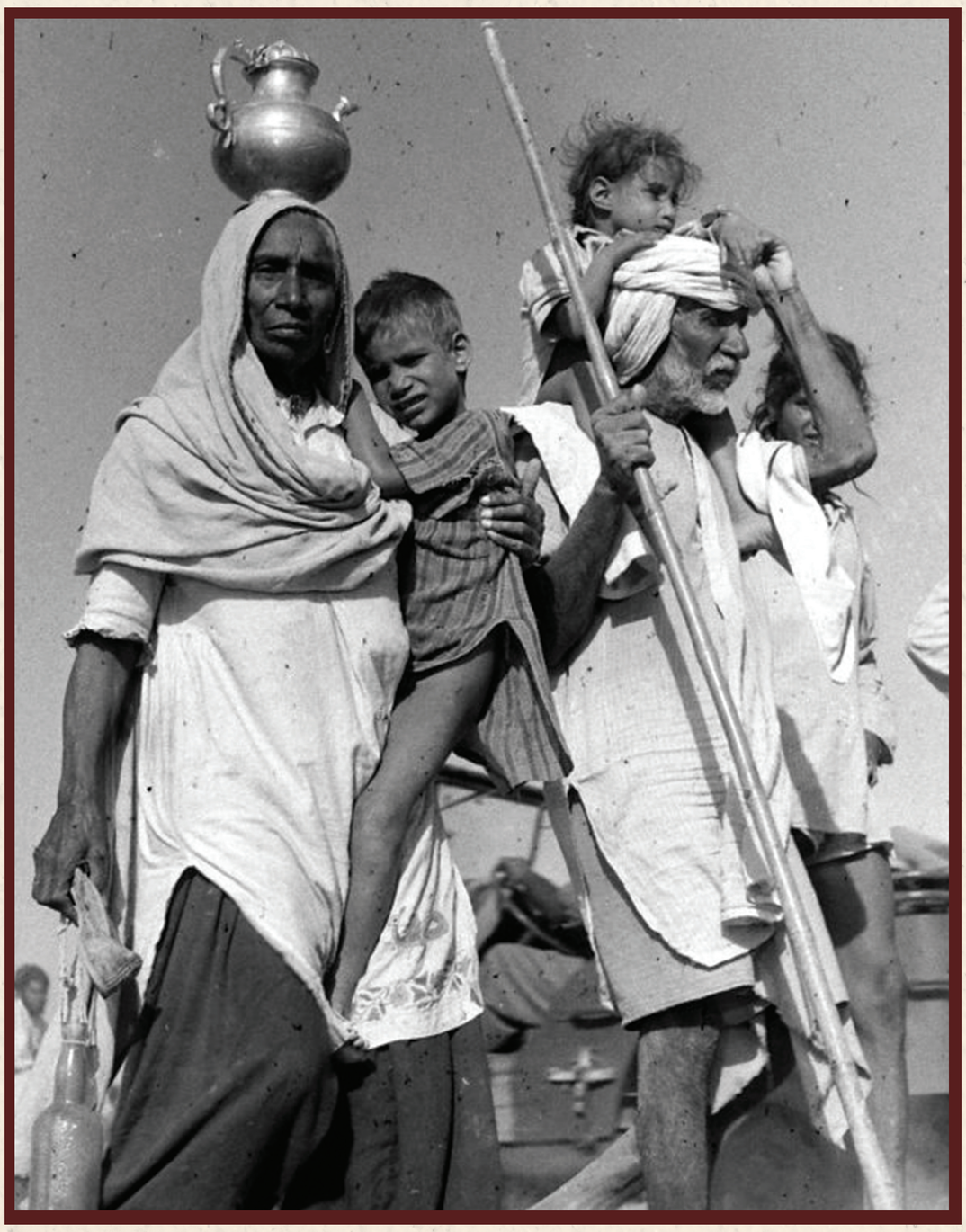


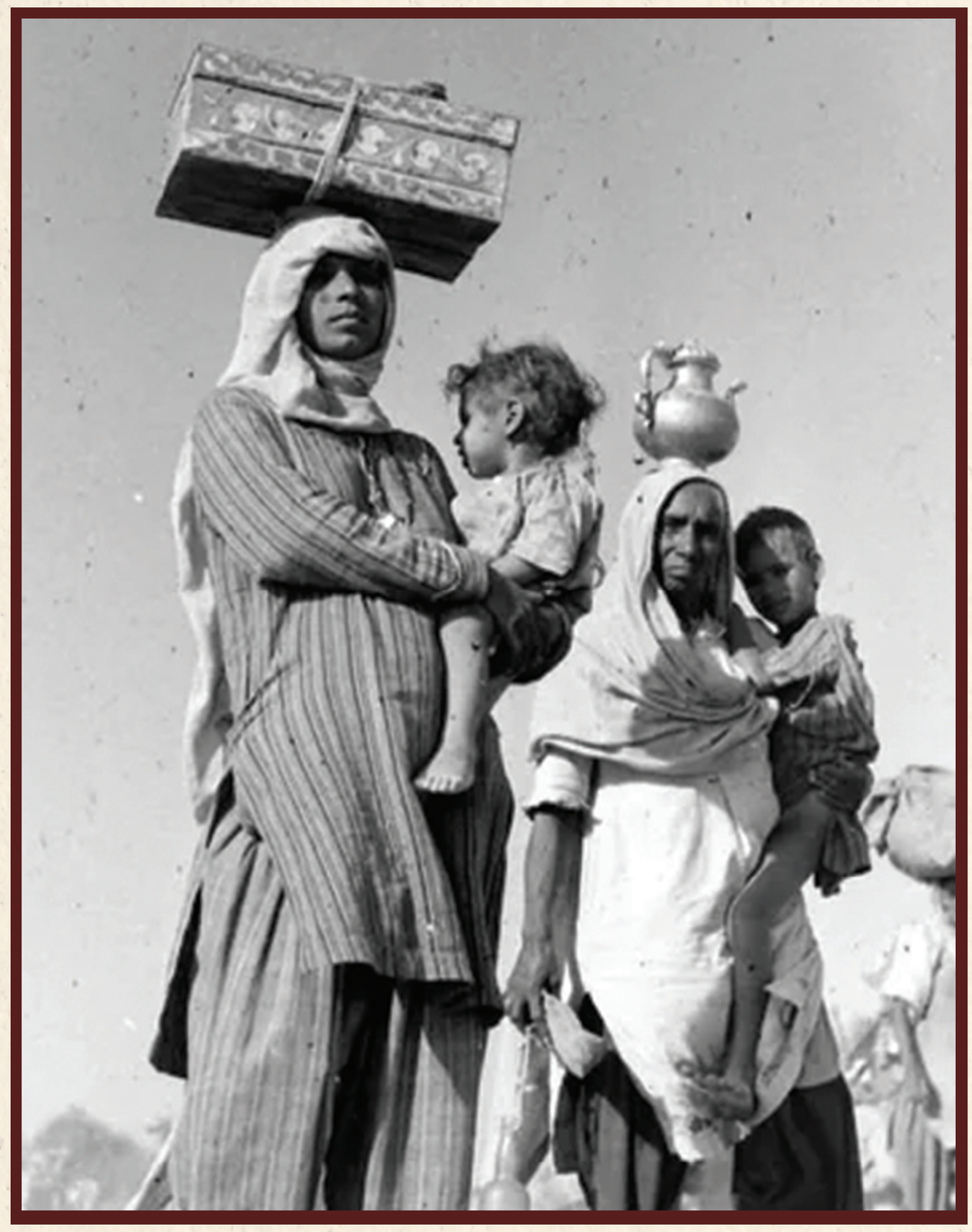
पाकिस्तान की पहली राजधानी कराची में उस समय हिंदुओं की आबादी 46 फीसद से ज्यादा थी, लिहाजा बंटवारे के दौरान बड़ी संख्या में हिंदुओं को पलायन के लिए मजबूर होना पड़ा।

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस







विभाजन का दंश सर्वाधिक महिलाओं ने झेला, आंकड़े बताते हैं कि करीब 55,000 हिन्दू और सिख महिलाओं का अपहरण किया गया था।

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

एक मुल्क की टीस लिए चलती रेलें



1947 में लाखों लोगों को जबरन भारत और पाकिस्तान के बीच खींची गई नई सीमाओं को पार कर पलायन करना पड़ा। रेलगाड़ियों ने इस विशाल पलायन में अहम भूमिका निभाई। 15 अगस्त 1947 से 8 सितंबर 1947 के बीच ही अनुमानतः 7 लाख शरणार्थियों ने ट्रेनों के माध्यम से यात्रा की। इतने बड़े पैमाने पर लोगों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचाने के लिए न केवल यात्री गाड़ियों का, बल्कि मालगाड़ियों का भी उपयोग किया गया। यह केवल भौगोलिक नहीं, बल्कि भावनात्मक, सामाजिक और आध्यात्मिक स्तर पर भी एक गहरा और असहनीय पलायन था।

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस



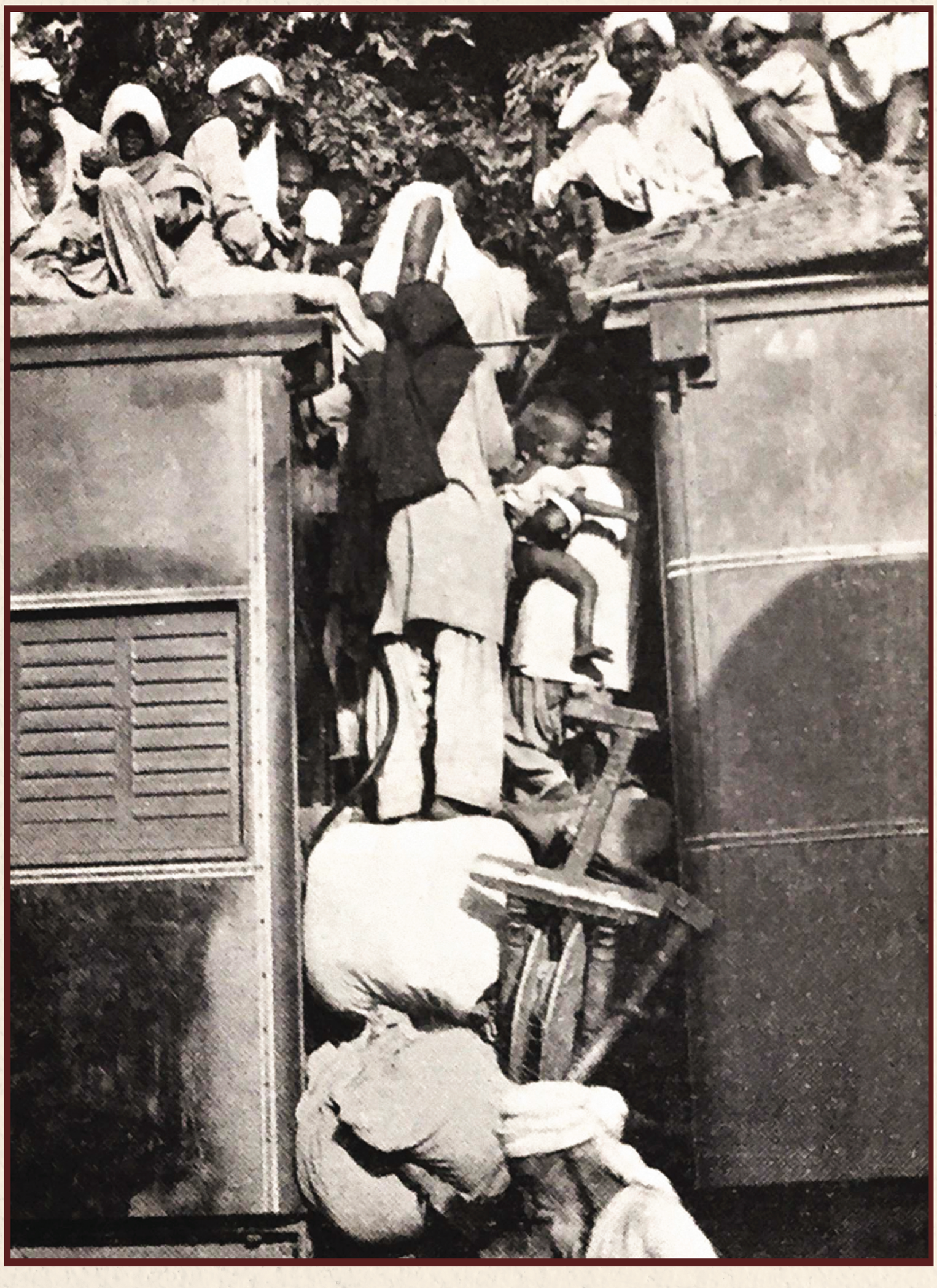


सत्यमेव जयते

भारत सरकार

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

आशा की डोर थामे एक भीड़ का पलायन



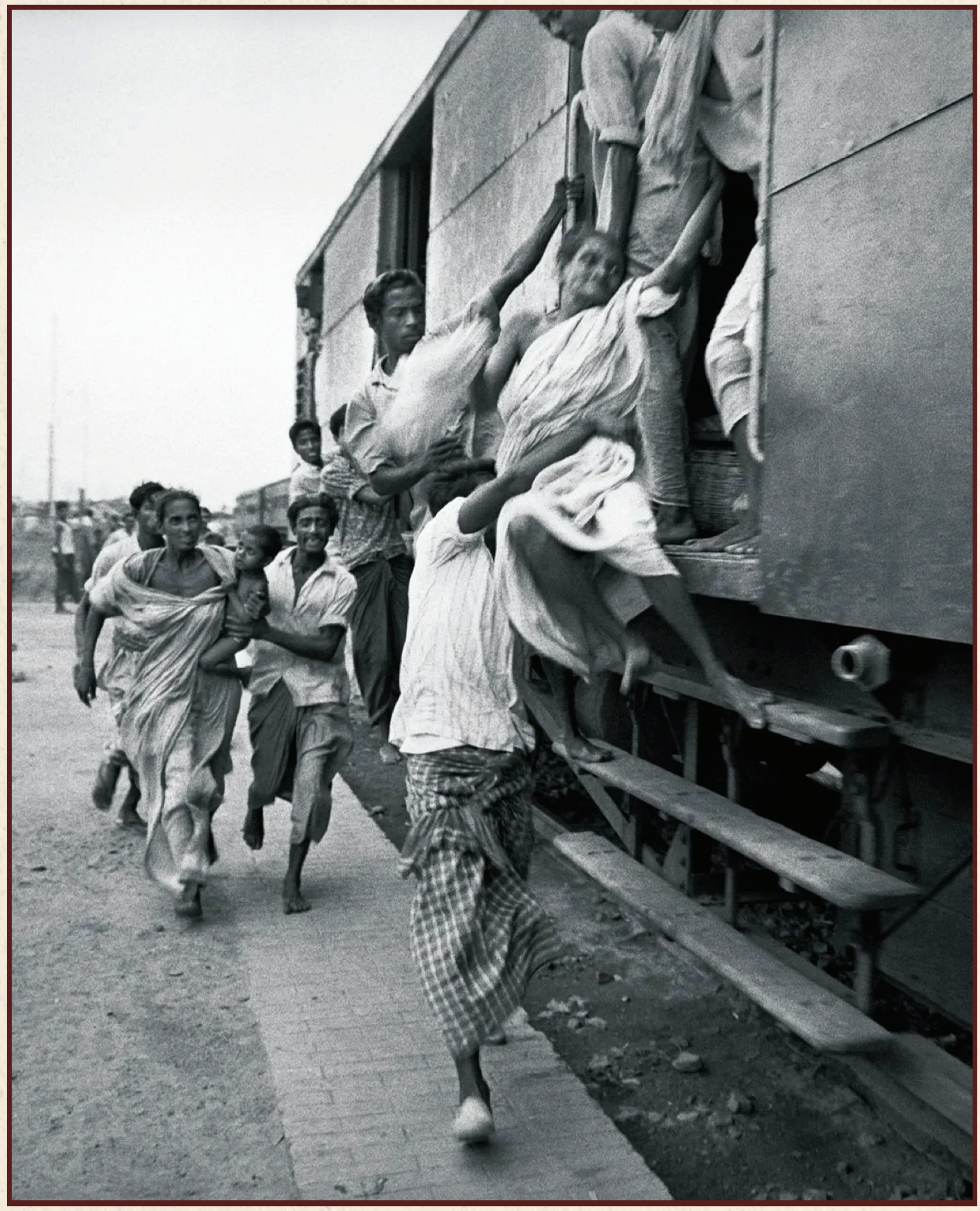
भय का माहौल ऐसा था कि हर कोई सुरक्षित पहुंचना चाहता था, इसलिए रेलगाड़ियों में उपलब्ध हर इंच जगह — चाहे वह डिब्बों के बीच की खाली जगह हो या ट्रेनों की छत — पूरी तरह से इस्तेमाल की गई। जो जहाँ जगह पा सका, वहीं सिमट गया।

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

जीवित रहना ही एकमात्र लक्ष्य



जान बचाने की उस दौड़ में न कोई सुविधा मायने रखती थी, न आराम — सिर्फ एक लक्ष्य था, किसी तरह सुरक्षित पार पहुँचना। यह दृश्य उस समय के भय, असुरक्षा और हताशा का सजीव प्रमाण था।

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

अनदेखे नरसंहारों के साक्ष्य



Ghost Trains – यात्रियों को ले जाने वाली ट्रेनों को निशाना बनाकर उसमें सवार लोगों की निर्मम हत्या कर दी गई। ऐसी ट्रेनों को, जो केवल शवों से भरी हुई लौटती थीं, लोग "भुतहा ट्रेन" (Ghost Trains) कहने लगे थे।

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

क्षमता से परे, इंसानियत के लिए



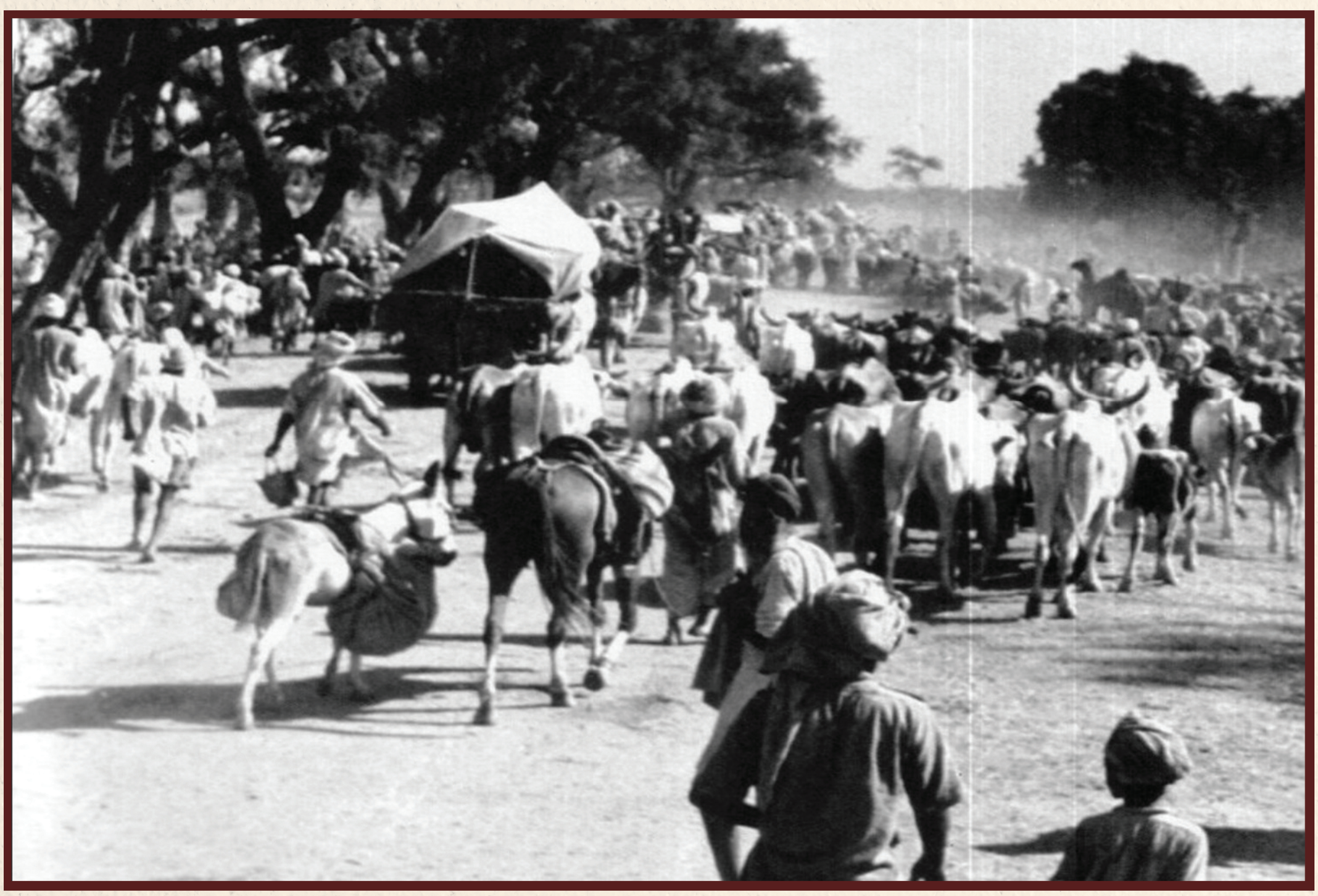
1947 में भारत में 115 नागरिक विमान थे, जिसमें से 25 डेकोटा विमान थे। इन विमानों ने अपनी क्षमता से ज्यादा लोगों को लेकर उड़ान भरी थी, जिन्होंनें करीब 35000 लोगों के पलायन में मदद की। इन विमानों ने बाद में राहत सामग्री को पहुंचाने में अहम योगदान दिया।

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

जब आसमान बना सहारा



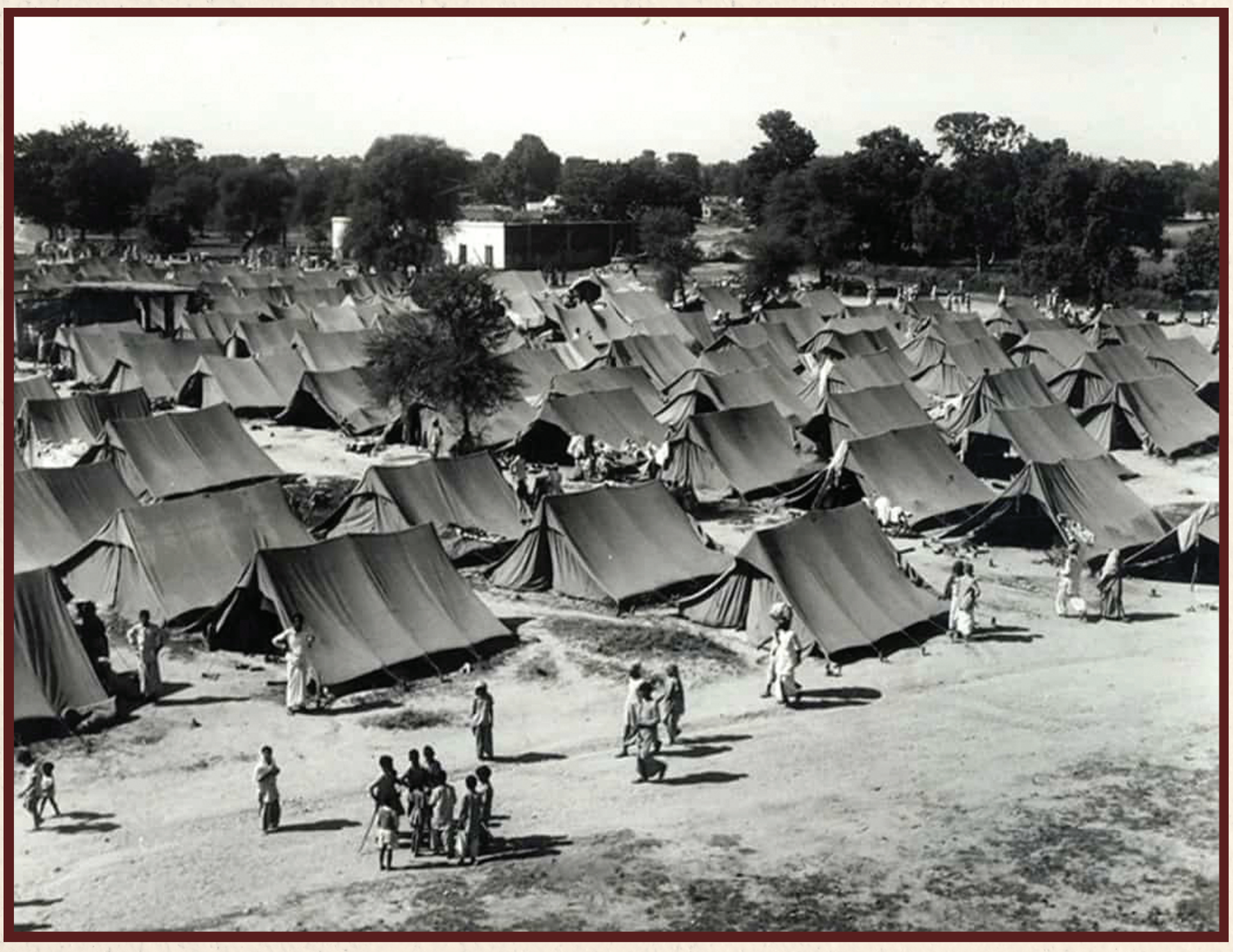
पलायन के दौरान वायु सेना ने भी अहम योगदान दिया। जैसे सितंबर 1947 में, पंजाब के ऊपर उड़ान भरते विमानों ने एक चौंका देने वाला दृश्य देखा — करीब 30,000 शरणार्थी लगभग 25 मील (40 किलोमीटर) की दूरी तक पैदल चल रहे थे। इन विमानों ने रास्तों में छिपी हुई भीड़ों को पहचाना जो थके-हारे शरणार्थियों पर हमला करने की फिराक में थीं, और तुरंत उनकी स्थिति की जानकारी सैन्य गश्ती दलों को भेजी गई।

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

उजड़े सपनों का डेरा

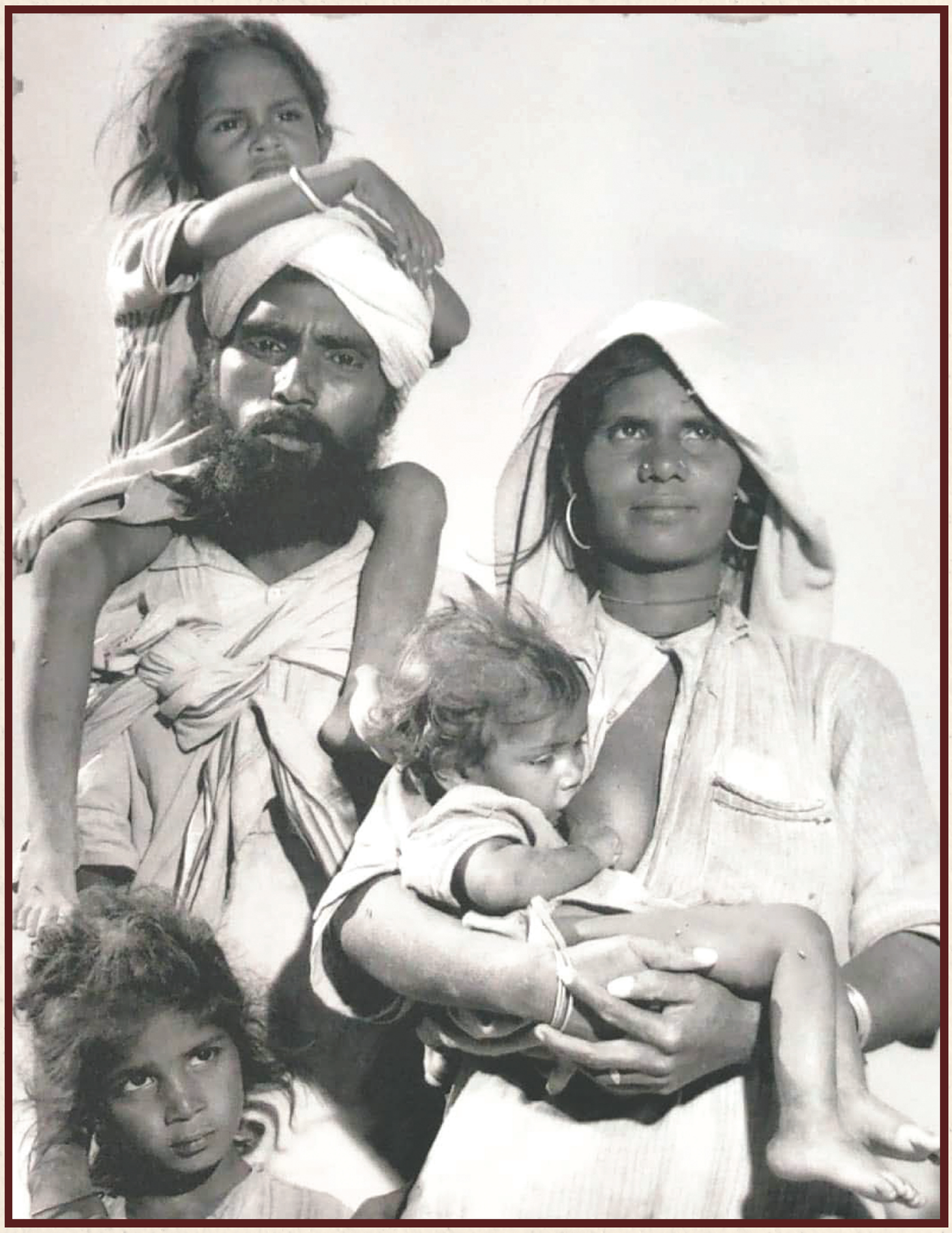


देश के बंटवारे के समय दिल्ली के किंग्जवे कैंप में सबसे ज्यादा 3 लाख लोगों ने शरण ली।

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस



अपनी उम्मीदें, अपने सपने, अपना परिवार और अपना देश